नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 368, नई दिल्ली, रविवार 08 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप - शिव और शक्ति का दिव्य मिलन

06 राजेश्वरी चटर्जी भारत की एक अग्रणी महिला वैज्ञानिक

08 कोई कमी नहीं होगी, राज्य में पर्याप्त तेल है: आपूर्ति मंत्री

पिंक और मैजेंटा लाइन के नए कॉरिडोर रविवार से शुरू, पीएम मोदी करेंगे उद्घाटन

दिल्ली मेट्रो की पिंक लाइन पर मजलिस पार्क से मौजपुर-बाबरपुर और मैजेंटा लाइन पर दीपाली चौक से मजलिस पार्क कॉरिडोर रविवार को आम यात्रियों के लिए खुलेंगे।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पिंक लाइन पर मजलिस पार्क से मौजपुर-बाबरपुर कॉरिडोर और मैजेंटा लाइन पर दीपाली चौक से मजलिस पार्क कॉरिडोर पर रविवार को आम यात्रियों के लिए मेट्रो ट्रेन सर्विस शुरू हो जाएगी। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (DMRC) की तरफ से दी गई जानकारी के मुताबिक, प्रधानमंत्री दोनों कॉरिडोर का उद्घाटन करेंगे। उसके बाद दोपहर 3 बजे से दोनों कॉरिडोर पर यात्रियों के लिए मेट्रो सर्विस शुरू हो जाएगी।

मेट्रो फेज 3 लाइनों पर रविवार को मेट्रो ट्रेनें एक घंटा पहले चलना शुरू हो जाएंगी। DMRC की तरफ से X पर दी गई जानकारी के मुताबिक, पिंक लाइन पर मजलिस पार्क से शिव विहार, मैजेंटा लाइन पर बॉटनिकल गार्डन से जनकपुरी वेस्ट-कृष्णा पार्क एक्सटेंशन और ग्रे लाइन पर द्वारका से ढांसा बस स्टैंड तक मेट्रो सर्विस सुबह 7 बजे के बजाय सुबह 6 बजे से मिलेगी।

हर नारी में बसता है माँ का स्वरूप

डॉ. विक्रम चौरसिया

नारी केवल एक रिश्ता नहीं, बल्कि सृजन, संस्कार और संवेदनशीलता की वह शक्ति है जो परिवार, समाज और राष्ट्र को दिशा देती है। जब नारी को सम्मान, शिक्षा और अवसर मिलता है, तब प्रगति की नई राहें खुलती हैं और समाज सकारात्मक परिवर्तन की ओर बढ़ता है।

नारी सृष्टि की सबसे अनुपम और सृजनशील रचना है। वह कभी माँ, कभी बहन, कभी बेटी, कभी पत्नी तो कभी मित्र बनकर प्रेम, स्नेह और संस्कार का अमृत समाज में घोलती है। अपनी कोख में नौ माह हमको धारण कर हमे जन्म देने वाली जननी ही जीवन की प्रथम गुरुमां है। इसलिए यह कहना बिल्कुल उचित है कि हर नारी किसी न किसी रूप में माँ ही होती है, क्योंकि उसके भीतर ममता, करुणा और सृजन की अनंत शक्ति बसती है।

मुझे अपना बचपन आज भी याद है। हमारे परिवार में कई वर्षों तक कोई बहन नहीं थी। मेरी माँ, पिता जी और दादा-दादीजी मंदिरों में एक बेटी के जन्म के लिए मन्नतें माँगते थे। जब अंततः हमारे घर बहन का जन्म हुआ, तो पूरे परिवार में मानो खुशियों की नई रोशनी फैल गई। उस दिन मुझे यह एहसास हुआ कि बेटी केवल परिवार की सदस्य नहीं होती, बल्कि घर की भावनात्मक धुरी होती है, जो पूरे परिवार को स्नेह और संवेदना के सूत्र में बाँधती है।इतिहास भी नारी की शक्ति और प्रतिभा का साक्षी रहा है। प्राचीन भारत में गार्गी और मैत्रेयी ने ज्ञान और दर्शन की परंपरा को समृद्ध किया, वहीं स्वतंत्रता संग्राम के दौर में रानी लक्ष्मीबाई और सरोजिनी नायडू जैसी वीरांगनाओं ने साहस, नेतृत्व और देशभक्ति का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।आज शिक्षा और

जागरूकता के कारण नारी विज्ञान, शिक्षा, राजनीति, प्रशासन, सेना, खेल और अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला और खेल जगत की पी. वी. सिंधु जैसी वीरांगना इस सच्चाई को सिद्ध करती हैं कि अवसर मिलने पर नारी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहती, बल्कि अपनी प्रतिभा से समाज और राष्ट्र को गौरवान्वित करती है।फिर भी समाज के कुछ हिस्सों में आज भी कभी कभी भेदभाव की मानसिकता दिखाई देती है। बचपन से ही लड़के और लड़कियों के बीच अंतर करना असमानता की जड़ बन जाता है। यह सोच बदलने की आवश्यकता है, क्योंकि एक सशक्त समाज का निर्माण तभी संभव है जब स्त्री और पुरुष दोनों को समान सम्मान और अवसर प्राप्त हों।अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हमें यह संदेश देता है कि आधी आबादी का सम्मान और सशक्तिकरण ही समाज की वास्तविक प्रगति का आधार है। नारी और पुरुष समाज रूपी साइकिल के दो पहियों की तरह हैं जब दोनों संतुलन, सहयोग और समानता के साथ आगे बढ़ते हैं, तभी समाज सशक्त और प्रगतिशील बनता है।इसलिए आवश्यक है कि हम नारी को केवल रिश्तों के सीमित दायरे में न देखें, बल्कि उसे सृजन, संवेदना और शक्ति के रूप में पहचानें। सच तो यह है कि हर नारी में मातृत्व का स्वरूप बसता है। जिस दिन हम हर नारी में माँ का स्वरूप देखना सीख लेंगे, उसी दिन हमारा समाज अधिक संवेदनशील, मानवीय और प्रगतिशील बन सकेगा

चिंतक/ मेंटर/ दिल्ली विश्वविद्यालय

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा
के जनहित कार्यों को समर्पित

सड़क सुरंक्षा | महिला सुरक्षा
प्रदूषण | साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है,
तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुलक आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001

आवेदन प्रक्रिया
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGY2Cw9
मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : वित्तीय साइबर अपराध: बैंकिंग प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यकता

पिंकी कुंडू

1. डिजिटल अरेस्ट्स और निवेश/ट्रेडिंग धोखाधड़ी

• ये बहुआयामी साइबर घोटाले हैं जो भय, अधिकार और विश्वास का दुरुपयोग करते हैं।

• पीड़ितों को झूठे कानूनी कार्रवाई या धोखाधड़ीपूर्ण निवेश अवसरों के बहाने पैसे स्थानांतरित करने या संवेदनशील जानकारी साझा करने के लिए मजबूर किया जाता है।

• ऐसे घोटाले नियामक खामियों और संस्थानों की विश्वसनीयता पर फलते-फूलते हैं, जिससे इन्हें पहचानना और रोकना कठिन हो जाता है।

2. प्रणालीगत नियामक विफलताएँ

वरिष्ठ अधिवक्ता एन.एस. नप्पिनाई, जो सर्वोच्च न्यायालय की सहायता कर रही हैं, इंगित करती हैं:

• नियामक चूकः आरबीआई ने या तो दंड लगाने में विफलता दिखाई है या केवल न्यूनतम प्रतिबंध लगाए हैं, भले ही बैंक अपनी ही दिशानिर्देशों का उल्लंघन करें।

• कमज़ोर निवारणः सख्त दंड के बिना, बैंकों के पास धोखाधड़ी पहचान तंत्र को मजबूत करने का कोई प्रोत्साहन नहीं है।

• जवाबदेही का अंतरालः उपभोक्ता संरक्षण मानकों के उल्लंघन पर भी बैंक अक्सर जिम्मेदारी से बच जाते हैं, जिससे उपभोक्ता असुरक्षित रह जाते हैं।

3. आरबीआई की भूमिका

• केंद्रीय नियामक के रूप में आरबीआई को कठोर दंड लागू करने चाहिए।

• दंड हानि की गंभीरता के अनुरूप होना चाहिए और लापरवाही के खिलाफ निवारक का काम करना चाहिए।

• एक धोखाधड़ी-मुक्त पारिस्थितिकी तंत्र के लिए आरबीआई को सलाहात्मक दिशानिर्देशों से आगे बढ़कर बाध्यकारी प्रवर्तन तंत्र अपनाना होगा, जिसमें मापनीय अनुपालन मानक हों।

4. एआई-आधारित धोखाधड़ी पहचान

नप्पिनाई की सिफारिश तकनीक-आधारित सतर्कता पर जोर देती है:

• बैंकों को अनिवार्य रूप से एआई-संचालित प्रणालियाँ लागू करनी चाहिए ताकि असामान्य लेनदेन की निगरानी हो सके।

• एआई उपकरण कर सकते हैं:

o वास्तविक समय में असामान्य खाता गतिविधि को चिन्हित।

o कई खातों में एक साथ धोखाधड़ी पैटर्न का पता लगाना।

o धीमी और त्रुटिपूर्ण मैनुअल निगरानी पर निर्भरता को कम करना।

– यह वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप है, जहाँ वित्तीय धोखाधड़ी से निपटने में मशीन लर्निंग मॉडल केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

5. आवश्यक प्रणालीगत सुधार

साइबर धोखाधड़ी के खिलाफ लचीलापन बनाने के लिए सुधार बहु-स्तरीय होने चाहिएः

– नियामक प्रवर्तनः आरबीआई को दिशानिर्देश उल्लंघन पर कठोर, गैर-परक्राम्य दंड लागू करने चाहिए।

– प्रौद्योगिकी अनिवार्यताः एआई-आधारित धोखाधड़ी पहचान सभी बैंकों में अनिवार्य होनी चाहिए, नियमित उन्नयन के साथ।

– उपभोक्ता जागरूकताः डिजिटल अरेस्ट्स, फ़िशिंग और निवेश घोटालों पर ग्राहकों को शिक्षित करने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान।

– अंतर-एजेंसी समन्वयः आरबीआई, कानून प्रवर्तन और साइबर अपराध सेल के बीच सहज सहयोग ताकि धोखाधड़ी नेटवर्क को ध्वस्त किया जा सके।

– निरंतर ऑडिटः बैंकों की धोखाधड़ी पहचान प्रणालियों का स्वतंत्र ऑडिट ताकि अनुपालन और जवाबदेही सुनिश्चित हो।

– घटना रिपोर्टिंग ढाँचाः साइबर धोखाधड़ी घटनाओं की आरबीआई को अनिवार्य रिपोर्टिंग, और उठाए गए सुधारात्मक कदमों पर पारदर्शिता।

6. निष्कर्ष

डिजिटल अरेस्ट्स और वित्तीय साइबर धोखाधड़ी प्रौद्योगिकी, नियमन और उपभोक्ता विश्वास के संगम को उजागर करते हैं। बिना प्रणालीगत सुधारों के, भारत की बैंकिंग प्रणाली शोषण के प्रति असुरक्षित बनी रहेगी। आरबीआई को निर्णायक रूप से कार्य करना होगा—दंड लागू करके, एआई-आधारित धोखाधड़ी पहचान को अनिवार्य बनाकर, और उपभोक्ता जागरूकता को मजबूत करके—ताकि एक सुरक्षित, धोखाधड़ी-मुक्त वित्तीय वातावरण सुनिश्चित किया जा सके।

नारी सशक्तिकरण

हमारे भारत देश में कई युगों से कई पीढियां से नारी को पूजा जाता है ।

नारी की देवी स्वरूप में पूजा की जाती है। हमारे देश की संस्कृति में नारी शक्ति का शीर्ष स्थान है। देश को आजाद करने में नारी शक्ति का अहम भूमिका रही। रानी अवंतिका बाई, रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, रानी अहिल्याबाई ने देश के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया युद्ध क्षेत्र में अपना जौहर दिखाते हुए वीरगति को प्राप्त हुई ।

लेकिन अपने देश को झुकने नहीं दिया।

तिरंगा की आन बान शान के लिए दुश्मनों को रक्त से नहलाती रही है हमें गर्व है ऐसी शूरवीर वीरांगनाएं हमारे देश में जन्म लेकर भारत माता माता का मान बढ़ाती रही है कभी भी मातृशक्ति की योगदान को बुलाया नहीं जा सकता । नारी से ही सृष्टि का विकास हुआ है मां पत्नी, बहन, बेटी, हर रूप में नारी श्रेष्ठता की प्रतिमूर्ति है ।हर घर आंगन को अपने प्यार की बूंदों से सींचती है। आज हमारे समाज में महिलाओं की सुरक्षा स्थिति के बारे में चिंतन की आवश्यकता है ।जिस तरह देश में घटनाएं घट रही है बलात्कार हो रहे हैं छेड़छाड़ हो रही है वह बहुत ही निंदनीय कृत्य है हमारी सरकार को कठोर कदम उठाना चाहिए । अपने घर की महिलाओं, बेटी बहन को आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन देना चाहिए। घर से बाहर आने जाने पर अपनी सुरक्षा कैसी करनी है यदि अकेले जाना है कहीं तो कैसे सफर करना है आवश्यक दुरभाष नंबर एरिया की पूरी जानकारी सामाजिक संस्थाओं की मदद लेना, पुलिस चौकी के संपर्क में रहना किसी के साथ बैठने से पहले पूरी जानकारी लेकर

ही बैठना ।आदि के संबंध में पूर्ण जानकारी होना चाहिए आज कल अगवा किडनैपिग की घटनाएं तेजी बढ रही है आज हमें हमारे समाज को महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए लघु उद्योग ,कुटीर उद्योग, पैकिंग सिलाई कढ़ाई का प्रशिक्षण, कंप्यूटर प्रशिक्षण घर में बनी चीजे पापड़ ,कपड़े सिलना, आदि के क्षेत्र में उन्हें स्वयं का रोजगार व व्यवसाय के लिए प्रेरित करना चाहिए ।आज हमारी बेटी बहन शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैअच्छे अंक हासिल कर देश-विदेश में नाम रोशन कर रही है देश में महिलाओं का तेजी से विकास हो रहा है ।आज कलेक्टर, एसपी, एसडीएम , तहसीलदार डॉक्टर, पंचायत सचिव, शिक्षिका, सरपंच, अध्यक्ष, पार्षद आंगनबाड़ी सहायिका, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, प्रशासन विभाग, रेलवे विभाग, कृषि विभाग, समाज कल्याण विभाग, हर जगह पुरुष के साथ महिलाओं की भागीदारी है सुनिश्चित है महिलाएं देश की सेवा कर रही है बेटी, महिलाएं ,राजनीति, खेल में आगे बढ़ चढकर हिस्सा लेकर देश दुनिया की प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक , कांस्य पदक, रजत पदक पदक हासिल कर भारत का नाम रोशन कर रही हैं।जिनमें प्रमुख रूप से सानिया मिर्जा , टेनिस) साइना नेहवाल ,बैडमिंटन)अंजुम चोपड़ा, क्रिकेट आदि का प्रमुख नाम है। आज विज्ञान के क्षेत्र में नए-नए शोध अविष्कार कर रही है महिलाएं वैज्ञानिक के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कर कर रही है नारी शक्ति का हमारे देश की शान है। भारतीय संस्कृति सभ्यता की पहचान है नारी की संकल्पना के बिना भारत का इतिहास वर्तमान अधूरा है। नारी का सम्मान करें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सरकार की योजना एवं अभियान का सहयोग करें

बेटी नहीं रहेगी तो बहू कहां से लाओगे ।

भ्रूण हत्या जैसी कृति का अंत करो।

अपनी मां का सम्मान करो करें सेवा करें।

मां के आशीर्वाद से चारों धाम की यात्रा का फल मिलता है।

शैलेन्द्र पयासी, साहित्यकार
विजयराघवगढ़, कटनी, एमपी

रेडिएशन थेरेपी (Radiation Therapy) — आधुनिक कैंसर उपचार की सशक्त विधि

रेडिएशन थेरेपी, जिसे रेडियोथेरेपी भी कहा जाता है, आज के समय में कैंसर के सबसे प्रभावी और व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले उपचारों में से एक है। यह उच्च-ऊर्जा किरणों (जैसे एक्स-रे, प्रोटॉन या इलेक्ट्रॉन) का उपयोग करके कैंसर कोशिकाओं के डीएनए को क्षतिग्रस्त करती है, जिससे वे बढ़ना और विभाजित होना बंद कर देती हैं।

स्वस्थ कोशिकाएँ इस क्षति की मरम्मत कैंसर कोशिकाओं की तुलना में बेहतर ढंग से कर सकती हैं — यही कारण है कि यह उपचार सुरक्षित और लक्षित माना जाता है।

विश्वभर में आधे से अधिक कैंसर रोगियों को जीवन के किसी न किसी चरण में रेडिएशन थेरेपी दी जाती है —

मुख्य उपचार (Primary/Curative) के रूप में

सर्जरी के बाद (Adjuvant)

सर्जरी से पहले (Neoadjuvant)

कीमोथेरेपी या इम्यूनोथेरेपी के साथ

या उन्नत अवस्था में लक्षणों से राहत (Palliative) के लिए

आधुनिक तकनीकें — अत्यधिक सटीक और सुरक्षित

आज की रेडिएशन थेरेपी पुरानी पद्धतियों से बिल्कुल अलग है। आधुनिक मशीनें ट्यूमर को अत्यंत सटीकता से निशाना बनाती हैं और आसपास के स्वस्थ ऊतकों को अधिकतम सुरक्षित रखती हैं।

प्रमुख आधुनिक तकनीकें:

IMRT (Intensity-Modulated Radiation Therapy)

IGRT (Image-Guided Radiation Therapy)

SBRT (Stereotactic Body Radiation Therapy)

Proton Therapy

इन तकनीकों से उपचार अधिक सटीक, कम अवधि वाला और कम दुष्प्रभाव वाला हो गया है। अधिकतर उपचार आउटपेशेंट (बिना भर्ती) होते हैं, दर्दरहित होते हैं, और कई मरीज उपचार के दौरान अपनी नौकरी व दैनिक जीवन जारी रखते हैं।

✗ मिथक बनाम ✓ सच्चाई

मिथक 1: रेडिएशन थेरेपी बहुत दर्द देती है या शरीर में जलन/गर्मी महसूस होती है।

सच्चाई:

उपचार के दौरान कोई दर्द, जलन या गर्मी महसूस नहीं होती। यह बिल्कुल सामान्य एक्स-रे जैसा होता है। मशीन चालू होती है, किरणें काम करती हैं, और मशीन बंद होते ही सब समाप्त।

मिथक 2: रेडिएशन के बाद व्यक्ति "रेडियोएक्टिव" हो जाता है।

सच्चाई:

सबसे सामान्य प्रकार — External Beam Radiation — में मरीज रेडियोएक्टिव नहीं होता। मशीन बंद होते ही कोई विकिरण शरीर में नहीं रहता। आप तुरंत परिवार को गले लगा सकते हैं।

केवल कुछ विशेष आंतरिक उपचार (जैसे ब्रैकीथेरेपी या रेडियोएक्टिव आयोडीन) में अस्थायी सावधानियाँ दी जाती हैं।

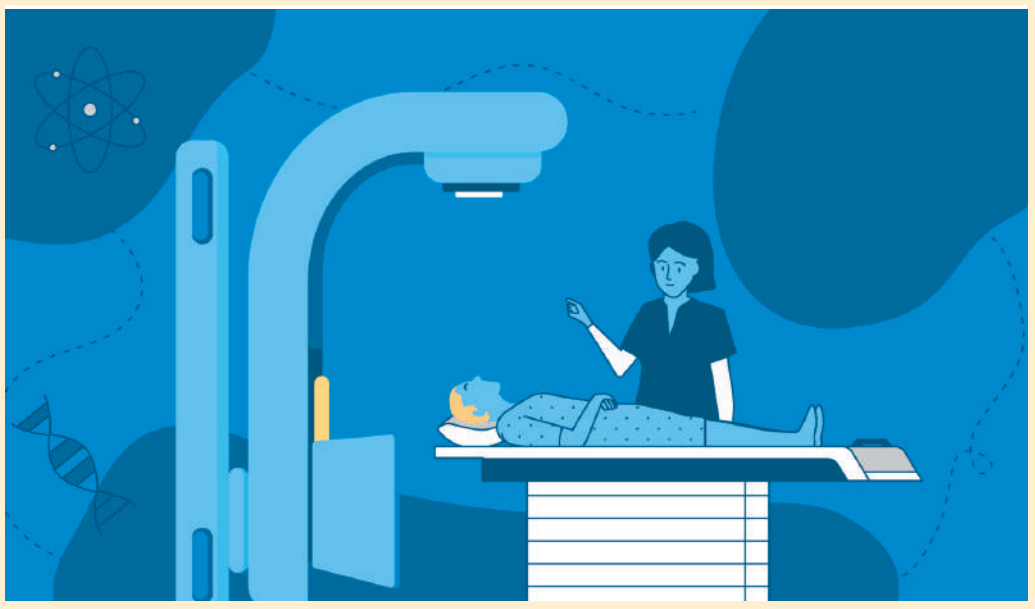

मिथक 3: इससे पूरे शरीर के बाल झड़ जाते हैं या कीमोथेरेपी जैसे दुष्प्रभाव होते हैं।

सच्चाई:

दुष्प्रभाव केवल उसी हिस्से में होते हैं जहाँ उपचार दिया जाता है।

सिर पर रेडिएशन होने पर ही सिर के बाल झड़ते हैं।

पेट पर देने से ही मतली हो सकती है।

सबसे सामान्य दुष्प्रभाव है हल्की थकान।

त्वचा पर हल्की लालिमा या सनबर्न जैसा प्रभाव हो सकता है, जो कुछ हफ्तों में ठीक हो जाता है।

मिथक 4: रेडिएशन भविष्य में निश्चित रूप से दूसरा कैंसर करेगा।

सच्चाई:

यह जोखिम बहुत कम होता है (अक्सर दशकों बाद)। वर्तमान कैंसर को ठीक करने का लाभ इस जोखिम से कहीं अधिक है। आधुनिक तकनीकों ने इस जोखिम को और कम कर दिया है।

मिथक 5: यह केवल अंतिम अवस्था के कैंसर में दिया जाता है।

सच्चाई:

रेडिएशन हर चरण में उपयोग होता है — प्रारंभिक, मध्यम और उन्नत।

कई मामलों में यह मुख्य उपचार होता है, जैसे प्रोस्टेट, स्तन, और सिर-गर्दन कैंसर।

मिथक 6: उपचार के दौरान सामान्य जीवन संभव नहीं।

सच्चाई:

अधिकांश मरीज काम जारी रखते हैं।

सत्र 15–30 मिनट के होते हैं

सप्ताह में 5 दिन

3–5 सप्ताह (या कुछ मामलों में 1–5 सत्र)

हल्का व्यायाम थकान कम करने में मदद करता है।

मिथक 7: यह पुरानी और खतरनाक तकनीक है।

सच्चाई:

रेडिएशन आधुनिक ऑन्कोलॉजी का स्तंभ है।

नई मशीनें 3D इमेजिंग, कंप्यूटर आधारित डोज़ कैलकुलेशन और सटीक टारगेटिंग से उपचार को पहले से कहीं अधिक सुरक्षित बनाती हैं।

मिथक 8: त्वचा स्थायी रूप से जल जाएगी।

सच्चाई:

हल्की लालिमा या काली पड़ना अस्थायी होता है। गंभीर जलन आज की तकनीक में दुर्लभ है।

अहमदाबाद व गुजरात में उपलब्ध सुविधाएँ

अहमदाबाद में उन्नत रेडिएशन सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जैसे:

Gujarat Cancer & Research Institute

HCG Cancer Centre

Apollo Hospital

Zydus Hospital

इन केंद्रों में TrueBeam, Halcyon, IMRT, SBRT, TomoTherapy जैसी आधुनिक मशीनें उपलब्ध हैं, जो वैश्विक मानकों के अनुरूप परिणाम देती हैं।

2025–2026 की नवीनतम प्रगति

1. Adaptive Radiation Therapy (ART)

रोज़ाना की इमेजिंग के आधार पर उपचार योजना को तुरंत समायोजित किया जाता है।

2. MR-Linac Technology

MRI और रेडिएशन मशीन का संयोजन — वास्तविक समय में ट्यूमर को देखकर उपचार।

3. Hypofractionation

कम सत्रों में अधिक प्रभावी डोज़ — कम समय में उपचार पूरा।

4. Proton Therapy में उन्नति

स्वस्थ ऊतक की और अधिक सुरक्षा।

5. AI आधारित उपचार योजना

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से डोज़ प्लानिंग अधिक सटीक और तेज़।

रोगी सुझाव (Patient Tips)

- ✓ संतुलित आहार लें
- ✓ पर्याप्त पानी पिएँ
- ✓ हल्का व्यायाम करें
- ✓ त्वचा की देखभाल करें
- ✓ डॉक्टर द्वारा दी गई क्रीम/दवाएँ नियमित लें
- ✓ किसी भी लक्षण को छुपाएँ नहीं

निष्कर्ष

रेडिएशन थेरेपी आज सुरक्षित, सटीक और अत्यधिक प्रभावी कैंसर उपचार है।

डर प्रायः पुरानी कहानियों से आता है — पर आधुनिक विज्ञान ने इसे अत्यंत उन्नत और नियंत्रित बना दिया है।

यह सामान्य जानकारी है, चिकित्सा सलाह नहीं। प्रत्येक मरीज और कैंसर अलग होता है — इसलिए अपने रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट से व्यक्तिगत परामर्श अवश्य लें।

परस्पर विरोधी स्वास्थ्य सलाहों की भूलभुलैया में मार्गदर्शन

एचपीवी टीकाकरण के युग में विवेकपूर्ण निर्णय का आह्वान

आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल युग में मानवता को जानकारी तक अभूतपूर्व पहुँच प्राप्त हुई है।

परंतु इस प्रचुरता ने एक अप्रत्याशित विरोधाभास भी उत्पन्न किया है—जितनी अधिक जानकारी उपलब्ध है, उतना ही अधिक भ्रम भी पैदा हो रहा है। यह स्थिति विशेष रूप से ह्यूमन पैपिलोमा वायरस (HPV) वैक्सीन के संबंध में चल रही बहसों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

सम्मानित चिकित्सक, वैश्विक स्वास्थ्य संस्थाएँ और कठोर वैज्ञानिक अध्ययन एचपीवी वैक्सीन को कई प्रकार के कैंसर से बचाव के सबसे प्रभावशाली साधनों में से एक मानते हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ व्यक्ति—जिनमें कुछ डॉक्टर और सोशल मीडिया पर सक्रिय अनेक आवाजें भी शामिल हैं—इस वैक्सीन के प्रति सावधानी या संदेह व्यक्त करते हैं। वे अक्सर बाँझपन, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं या समयपूर्व मृत्यु जैसे कथित जोखिमों का उल्लेख करते हैं।

परिणामस्वरूप यह ध्रुवीकरण लाखों लोगों को इस दुविधा में डाल देता है कि वे आखिर किस पर विश्वास करें।

यह भ्रम केवल कम शिक्षित लोगों तक सीमित नहीं है। अत्यंत शिक्षित और सफल पेशेवर—जैसे कि अकाउंटेंट, इंजीनियर, वकील या व्यवसायी—भी जटिल चिकित्सा प्रमाणों की व्याख्या करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं।

आधुनिक युग में विशेषज्ञता का आधार ही विशेषीकरण है। उदाहरण के लिए, वाणिज्य में स्नातकोत्तर व्यक्ति लेखांकन और व्यापार की जटिलताओं को गहराई से समझता है, जबकि दशकों के अनुभव वाला चार्टर्ड अकाउंटेंट कर कानूनों का असाधारण ज्ञान रखता है।

किन्तु किसी एक क्षेत्र में दक्षता का अर्थ यह नहीं है कि वही व्यक्ति वायरोलॉजी, इम्यूनोलॉजी, महामारी विज्ञान या वैक्सीन विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी विशेषज्ञ हो।

इसीलिए समाज को एक व्यापक बौद्धिक आदत विकसित करनी चाहिए—साक्ष्यों का आलोचनात्मक परीक्षण करने की क्षमता, विश्वसनीय स्रोतों से परामर्श करने की प्रवृत्ति, और भय, अफवाह या भावनात्मक कथाओं के आधार पर प्रतिक्रिया देने के बजाय सूचित निर्णय लेने की क्षमता।

आलोचनात्मक सोच का एक वास्तविक उदाहरण

स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में आलोचनात्मक सोच क्यों आवश्यक है, इसे एक वास्तविक घटना से समझा जा सकता है।

एक 42 वर्षीय महिला का एक मामूली सड़क दुर्घटना में सामना हुआ। उसे केवल हल्की खरोंचें और छोटे-मोटे नीले निशान आए थे, लेकिन कोई स्पष्ट फ्रैक्चर नहीं था। चिंतित होकर उसकी 17 वर्षीय बेटी उसे जाँच के लिए एक निजी अस्पताल ले गई।

वहाँ के डॉक्टर ने कई परीक्षण कराने का सुझाव दिया, जिनमें एक्स-रे और एमआरआई स्कैन भी शामिल थे। रिपोर्ट देखने के बाद डॉक्टर ने एक चिंताजनक निष्कर्ष सुनाया—मस्तिष्क में रक्तस्राव और रीढ़ की हड्डी में डिस्क हर्नियेशन।

ऐसी बात किसी भी परिवार को भयभीत कर सकती है। लेकिन उस युवती ने बिना सत्यापन के इस निष्कर्ष को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। आश्चर्यजनक परिपक्वता और विश्लेषणात्मक सोच का परिचय देते हुए उसने दूसरी राय (Second Opinion) लेने पर जोर दिया।

अस्पताल के कर्मचारियों की प्रारंभिक अनिच्छा के बावजूद उसने मेडिकल रिपोर्ट की प्रतियाँ प्राप्त कर लीं और उन्हें मुंबई के एक प्रतिष्ठित न्यूरोसर्जन को भेज दिया—जो उसके एक सहपाठी के पिता थे।

न्यूरोसर्जन के आकलन ने पूरे परिवार को राहत दी।

न तो मस्तिष्क में कोई रक्तस्राव था, न ही रीढ़ में डिस्क हर्नियेशन, और न ही कोई फ्रैक्चर। वास्तव में चोटें मामूली और सतही ही थीं।

उस किशोरी के दृढ़ निश्चय ने परिवार को अनावश्यक भय, संभावित अनावश्यक उपचार और भारी मानसिक तनाव से बचा लिया।

इस घटना से मिलने वाला व्यापक संदेश

यह घटना केवल एक चिकित्सीय प्रसंग नहीं है। यह आज हमारे सामने आने वाले अनेक स्वास्थ्य निर्णयों—विशेषकर टीकाकरण—के लिए एक शक्तिशाली रूपक भी है।

चिकित्सा सलाह के प्रति लोगों की प्रतिक्रियाओं को अक्सर कुछ मनोवैज्ञानिक कारक प्रभावित करते हैं:

Authority Bias (प्राधिकरण पक्षपात)

लोग अक्सर पहली बार सुने गए विशेषज्ञ के मत को बिना जाँच-पड़ताल के स्वीकार कर लेते हैं।

Availability Heuristic (उपलब्धता प्रभाव)

सोशल मीडिया पर फैलने वाली नाटकीय या डरावनी कहानियाँ विशाल वैज्ञानिक आँकड़ों की तुलना में अधिक प्रभावशाली प्रतीत होती हैं।

Fear Amplification (भय का विस्तार)

कैंसर जैसी बीमारियों का मात्र उल्लेख भी लोगों में ऐसी चिंता उत्पन्न कर सकता है जो तार्किक सोच को धुंधला कर देती है।

उस किशोरी की प्रतिक्रिया इस समस्या का समाधान दिखाती है—प्रश्न पूछना, जानकारी की पुष्टि करना, और स्वतंत्र विशेषज्ञों से परामर्श करना।

टीकाकरण के संदर्भ में इसका अर्थ है कि अप्रमाणित इंटरनेट दावों के बजाय समीक्षित वैज्ञानिक अनुसंधान, सार्वजनिक स्वास्थ्य दिशानिर्देशों और विशेषज्ञ सहमति पर ध्यान दिया जाए—साथ ही आवश्यक होने पर दूसरी राय लेने का अधिकार भी सुरक्षित रखा जाए।

एचपीवी और कैंसर की वैज्ञानिक वास्तविकता

ह्यूमन पैपिलोमा वायरस (HPV) मानवों में पाए जाने वाले सबसे सामान्य वायरल संक्रमणों में से एक है।

इसके कुछ विशेष प्रकार—विशेषकर HPV-16 और HPV-18—अधिकांश सर्वाइकल कैंसर (गर्भाशय ग्रीवा कैंसर) के लिए जिम्मेदार होते हैं। इसके अलावा यह गले, गुदा, लिंग और अन्य जननांग ऊतकों के कई कैंसरों से भी जुड़ा हुआ है।

सर्वाइकल कैंसर आज भी विश्वभर में एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती बना हुआ है, विशेष रूप से विकासशील देशों में जहाँ स्क्रीनिंग कार्यक्रम पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं।

केवल भारत में ही हर वर्ष हजारों महिलाओं की मृत्यु सर्वाइकल कैंसर के कारण हो जाती है, अक्सर इसलिए क्योंकि रोग का पता बहुत देर से चलता है।

एचपीवी वैक्सीन का विकास इसी समस्या को रोकने के लिए किया गया—ताकि संक्रमण होने से पहले ही सुरक्षा प्रदान की जा सके और कोशिकाओं में कैंसरकारी परिवर्तन होने से रोका जा सके।

2026 तक के प्रमुख वैज्ञानिक और नीतिगत विकास

1. कैंसर जोखिम में उल्लेखनीय कमी

ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम, स्वीडन और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों में किए गए बड़े जनसंख्या-आधारित अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि एचपीवी टीकाकरण ने सर्वाइकल कैंसर और उससे पहले की अवस्थाओं में अत्यधिक कमी ला दी है।

यदि यह टीका वायरस के संपर्क से पहले—आमतौर पर 9 से 14 वर्ष की आयु के बीच—दिया जाए, तो यह सर्वाइकल कैंसर के जोखिम को लगभग 80% या उससे अधिक तक कम कर सकता है।

यह जननांग मस्सों और अन्य कई एचपीवी-संबंधित कैंसरों से भी सुरक्षा प्रदान करता है।

कुछ अत्यधिक टीकाकृत आबादियों में तो युवा महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर लगभग समाप्ति की ओर बढ़ता दिखाई दे रहा है—जो सार्वजनिक स्वास्थ्य की एक असाधारण उपलब्धि है।

2. सिंगल-डोज़ (एक खुराक) की महत्वपूर्ण खोज

हाल के वर्षों में सबसे महत्वपूर्ण खोजों में से एक यह है कि एचपीवी वैक्सीन की एक ही खुराक भी दो खुराक के समान प्रभावी हो सकती है।

अमेरिकी नेशनल इंस्टीट्यूट्स ऑफ हेल्थ सहित कई बड़े शोधों ने यह दर्शाया कि खतरनाक एचपीवी प्रकारों के विरुद्ध स्थायी संक्रमण को रोकने में लगभग 97% प्रभावशीलता देखी गई।

इस खोज ने टीकाकरण को सरल, सस्ता और विकासशील देशों के लिए अधिक व्यावहारिक बना दिया है।

3. वैश्विक नीतियों में परिवर्तन

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने 2022 में सिंगल-डोज़ रणनीति का समर्थन किया।

2026 की शुरुआत तक:

* 160 से अधिक देशों ने एचपीवी टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किए
* लगभग 90 देशों ने एक-खुराक रणनीति अपनाई

इन प्रयासों से आने वाले दशकों में दस लाख से अधिक सर्वाइकल कैंसर मौतों को रोका जा सकता है।

4. सुरक्षा संबंधी व्यापक प्रमाण

एचपीवी वैक्सीन आधुनिक चिकित्सा में सबसे अधिक निगरानी किए गए टीकों में से एक है।

दुनिया भर में सैकड़ों मिलियन खुराकें दी जा चुकी हैं। बड़े वैज्ञानिक विश्लेषणों में पाया गया है कि:

सामान्य दुष्प्रभाव:

* इंजेक्शन वाली जगह पर हल्का दर्द
* थकान
* हल्का बुखार

गंभीर दुष्प्रभाव:

अत्यंत दुर्लभ और अन्य सामान्य टीकों के समान दर पर।

विस्तृत जाँचों के बाद बाँझपन, दीर्घकालिक न्यूरोलॉजिकल बीमारी या ऑटोइम्यून रोगों से इस वैक्सीन का कोई विश्वसनीय वैज्ञानिक संबंध नहीं पाया गया है।

5. भारत में एक ऐतिहासिक पहल

भारत ने हाल ही में सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया है।

2026 की शुरुआत में भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय एचपीवी टीकाकरण अभियान शुरू किया, जिसके अंतर्गत लाखों किशोरियों को यह टीका निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस कार्यक्रम में Gardasil-4 और भारत में विकसित Cervavac जैसी वैक्सीन का उपयोग किया जा रहा है, और भविष्य में इसे Universal Immunisation Programme में शामिल करने की योजना है।

भारत की विशाल जनसंख्या और सर्वाइकल कैंसर के उच्च बोझ को देखते हुए यह पहल आने वाले दशकों में असंख्य जीवन बचा सकती है।

जागरूक नागरिकों की भूमिका

उस दृढ़ निश्चयी किशोरी की कहानी हमें एक स्थायी संदेश देती है—आलोचनात्मक सोच स्वास्थ्य निर्णयों की एक शक्तिशाली सुरक्षा है।

किन्तु आलोचनात्मक सोच का अर्थ यह नहीं है कि हम हर वैज्ञानिक सहमति को अस्वीकार कर दें या हर विशेषज्ञ पर अविश्वास करें।

इसका वास्तविक अर्थ है:

* विश्वसनीय प्रमाणों की जाँच करना
* योग्य विशेषज्ञों से परामर्श करना
* आवश्यकता पड़ने पर दूसरी राय लेना
* विज्ञान और अफवाहों के बीच अंतर करना

जब इस दृष्टिकोण को जिम्मेदारी से अपनाया जाता है, तब निर्णय भय के आधार पर नहीं बल्कि प्रमाण-आधारित समझ पर लिए जाते हैं।

आगे का मार्ग

एचपीवी वैक्सीन निवारक चिकित्सा की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक है।

यह संक्रमण से पहले ही सुरक्षा प्रदान करके कई प्रकार के कैंसर के जोखिम को नाटकीय रूप से कम करने की क्षमता रखती है—और संभव है कि भविष्य में इन कैंसरों को लगभग समाप्त करने में भी योगदान दे।

फिर भी अंतिम निर्णय सूचित व्यक्तियों और परिवारों का ही होता है।

सच्ची शिक्षा केवल शैक्षणिक डिग्रियों से नहीं मापी जाती;

यह उस साहस में प्रकट होती है जिससे हम प्रश्न पूछते हैं,

उस अनुशासन में जिससे हम तथ्यों की पुष्टि करते हैं

और उस बुद्धिमत्ता में जिससे हम अपने और अपने प्रियजनों के कल्याण के लिए जिम्मेदार निर्णय लेते हैं।

आज की सूचना-बाढ़ वाली दुनिया में मार्गदर्शक सिद्धांत सरल है:

अपनी विश्लेषणात्मक क्षमता का उपयोग करें।

विश्वसनीय प्रमाण खोजें।

विश्वास करने से पहले सत्यापन करें।

और स्वास्थ्य संबंधी निर्णय ज्ञान के आधार पर लें—भय के आधार पर नहीं।

ऐसा दृष्टिकोण भ्रम को स्पष्टता में बदल देता है और समाज को उन चिकित्सा प्रगतियों को अपनाने के लिए सशक्त बनाता है जो आने वाली पीढ़ियों की रक्षा कर सकती हैं।

एपिस्टैक्सिस (नकसीर):

एपिस्टैक्सिस, जिसे सामान्य भाषा में नकसीर (Nosebleed) कहा जाता है, नाक के अंदर स्थित अत्यंत सूक्ष्म रक्त-वाहिनियों के फट जाने से होने वाला रक्तस्राव है।

नाक की आंतरिक परत (नैसल म्यूकोसा) में असंख्य केशिकाएँ सतह के बहुत निकट होती हैं, इसलिए हल्की-सी चोट, सूखापन या संक्रमण भी रक्तस्राव का कारण बन सकता है। जीवनकाल में लगभग 60% लोगों को कभी-न-कभी नकसीर का अनुभव होता है, विशेषतः बच्चों (2–10 वर्ष) और वृद्धों (50–80 वर्ष) में।

1. प्रकार

नकसीर मुख्यतः दो प्रकार की होती है:

1. अग्र (Anterior Epistaxis)

लगभग 90% मामलों में होती है। यह नाक के आगे के भाग में स्थित Kiesselbach's plexus (Little's area) से उत्पन्न होती है और प्रायः नियंत्रित करना आसान होता है।

2. पश्च (Posterior Epistaxis)

यह नाक के गहरे भाग से होती है, विशेषकर Woodruff's plexus से। यह अपेक्षाकृत दुर्लभ लेकिन अधिक गंभीर होती है और कभी-कभी अस्पताल में उपचार की आवश्यकता पड़ती है।

2. प्रमुख कारण

नकसीर कई कारणों से हो सकती है, जैसे—

नाक में उंगली डालना या चोट लगना

शुष्क मौसम या अत्यधिक सूखी हवा

सर्दी-जुकाम, एलर्जी या साइनस संक्रमण

उच्च रक्तचाप

रक्त के जमने से संबंधित रोग (जैसे हीमोफीलिया)

कुछ दवाएँ जैसे अस्पिरिन, वारफरिन, क्लोपिडोग्रेल आदि

नाक में ट्यूमर या संरचनात्मक विकार (दुर्लभ)

3. लक्षण

मुख्य लक्षण नाक से रक्त का बहना है।

कभी-कभी रक्त गले की ओर भी जा सकता है जिससे मतली, खाँसी या रक्त की उल्टी जैसा अनुभव हो सकता है। अत्यधिक रक्तस्राव होने पर चक्कर, कमजोरी या तेज धड़कन भी महसूस हो सकती है।

4. प्राथमिक उपचार

नकसीर होने पर तुरंत ये उपाय करें:

व्यक्ति को सीधा बैठाएँ और सिर थोड़ा आगे झुकाएँ।

नाक के नरम हिस्से को अंगूठे और उँगली से 10–15 मिनट तक दबाएँ।

ठंडी पट्टी या बर्फ नाक के ऊपर रख सकते हैं।

रक्त रुकने के बाद कुछ समय तक नाक जोर से साफ न करें।

अधिकांश मामलों में यह सरल उपाय रक्तस्राव रोक देते हैं।

5. चिकित्सकीय जाँच और उपचार

यदि नकसीर बार-बार हो या अधिक समय तक न रुके तो डॉक्टर द्वारा—

नाक की एंडोस्कोपी

रक्त परीक्षण (CBC, clotting profile)

आवश्यक होने पर CT स्कैन

किया जा सकता है। उपचार में सिल्वर नाइट्रेट से कॉटरी, नाक में पैकिंग, एंडोस्कोपिक सर्जरी या रक्तवाहिनियों का एम्बोलाइजेशन शामिल हो सकता है।

6. नवीन प्रगति (Latest Developments)

हाल के वर्षों में चिकित्सा विज्ञान में कई प्रगति हुई हैं, जैसे—

अवशोषित होने वाले (absorbable) nasal packing devices जो अधिक आरामदायक हैं

आधुनिक एंडोस्कोपिक सर्जिकल तकनीकें

रक्तस्राव रोकने वाले उन्नत हेमोस्टेटिक जैल और फोम

कुछ विशेष रोगों में टार्गेटेड बायोलॉजिक दवाएँ

निष्कर्ष

नकसीर सामान्यतः साधारण और नियंत्रित होने वाली समस्या है, परंतु यदि यह बार-बार हो, अधिक मात्रा में हो या अन्य लक्षणों के साथ हो तो इसे किसी गंभीर अंतर्निहित रोग का संकेत मानकर विशेषज्ञ (ENT चिकित्सक) से परामर्श लेना आवश्यक है।

शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप - शिव और शक्ति का दिव्य मिलन

पिंकी कुंडू

भगवान शिव के एक बहुत ही अद्भुत और रहस्यमय स्वरूप के बारे में बताने जा रही हूँ - अर्धनारीश्वर। यह सिर्फ एक मूर्ति या तस्वीर नहीं है, बल्कि इसके पीछे बहुत गहरा आध्यात्मिक और दार्शनिक रहस्य है। यह स्वरूप शिव और शक्ति के मिलन को दर्शाता है, जो सृष्टि के संतुलन का आधार है।

अर्धनारीश्वर कौन हैं?

अर्धनारीश्वर भगवान शिव का वह स्वरूप है जिसमें वे आधे पुरुष और आधी स्त्री हैं। दाहिना भाग भगवान शिव का है और बायां भाग माता पार्वती का। यह स्वरूप बताता है कि पुरुष और स्त्री एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। बिना एक के दूसरा अधूरा है।

यह स्वरूप हमें यह भी सिखाता है कि हमारे अंदर भी पुरुष और स्त्री दोनों ऊर्जाएं (energies) मौजूद हैं। हमें दोनों को संतुलित (balance) रखना होता है। न ज्यादा पुरुषत्व और न ज्यादा स्त्रीत्व, बल्कि दोनों का संतुलन ही सही जीवन की कुंजी है।

शिव और शक्ति का मिलन

शिव और शक्ति का मिलन बहुत ही महत्वपूर्ण है। शिव चेतना (consciousness) के प्रतीक हैं और शक्ति ऊर्जा (energy) के प्रतीक हैं। चेतना और ऊर्जा का मिलन ही सृष्टि (creation) का आधार है।

जब शिव और शक्ति मिलते हैं, तो संतुलन (balance) बनता है। अगर सिर्फ शिव हों, तो चेतना तो होगी लेकिन उसमें गतिशीलता (dynamism) नहीं होगी। अगर सिर्फ शक्ति हों, तो ऊर्जा तो होगी लेकिन उसे दिशा (direction) देने वाला कोई नहीं होगा। दोनों का मिलन ही सृष्टि को संचालित (operate) करता है।

इस मिलन को ही अर्धनारीश्वर के रूप में दर्शाया गया है। यह हमें बताता है कि संसार में जो कुछ भी है, वह इन्हीं दो शक्तियों के मेल से बना है।

अर्धनारीश्वर स्वरूप का वर्णन

अर्धनारीश्वर के स्वरूप का वर्णन बहुत ही अद्भुत है -

दाहिना भाग (शिव) -

- ✓ तीन नेत्र (trinetra)
- ✓ जटा (matted hair)
- ✓ गले में सर्प (serpent)
- ✓ हाथ में त्रिशूल (trident)
- ✓ बाघ की खाल पहने (tiger skin)
- ✓ चंद्रमा से सुशोभित

बायां भाग (शक्ति) -

- ✓ सुंदर केश विन्यास (beautiful hair)
- ✓ माथे पर सिंदूर (sindoor)
- ✓ कानों में कुंडल (earrings)
- ✓ हाथ में कमल (lotus)
- ✓ रेशमी वस्त्र (silk clothes)
- ✓ गहनों से सुसज्जित (adorned with jewelry)

अर्धनारीश्वर स्वरूप का दार्शनिक अर्थ इस स्वरूप के कई गहरे अर्थ हैं -

पहला अर्थ - पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं। कोई किसी से कम या ज्यादा नहीं है। दोनों मिलकर ही संसार चलाते हैं।

दूसरा अर्थ - हर व्यक्ति के अंदर पुरुष और स्त्री दोनों ऊर्जाएं होती हैं। हमें दोनों को पहचानना और संतुलित करना होता है।

तीसरा अर्थ - सृष्टि के हर कण में शिव और शक्ति दोनों मौजूद हैं। बिना दोनों के सृष्टि अधूरी है।

चौथा अर्थ - यह स्वरूप हमें सिखाता है कि विरोधी दिखने वाली चीजें भी एक-दूसरे की पूरक हो सकती हैं।

अर्धनारीश्वर की उत्पत्ति की कथा

पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार ऋषि भृगु ने भगवान शिव का अपमान किया। इससे माता पार्वती को बहुत क्रोध आया। उन्होंने शिव से कहा कि वे उन्हें भी अपने शरीर में स्थान दें, ताकि कोई उनका अपमान न कर सके। भगवान शिव ने माता पार्वती की बात मान ली और अपने शरीर का आधा हिस्सा उन्हें दे दिया। इस प्रकार अर्धनारीश्वर स्वरूप प्रकट हुआ।

एक अन्य कथा के अनुसार, ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचना के लिए शिव और शक्ति से प्रार्थना की। तब शिव और शक्ति ने एक ही रूप धारण किया और अर्धनारीश्वर के रूप में प्रकट हुए।

अर्धनारीश्वर की पूजा का महत्व

अर्धनारीश्वर की पूजा करने से कई लाभ होते हैं -

- ✓ शिव और शक्ति दोनों की कृपा एक साथ मिलती है
- ✓ वैवाहिक जीवन (married life) में सुख-शांति बढ़ती है
- ✓ पति-पत्नी में प्रेम और समझ बढ़ती है
- ✓ घर में सुख-समृद्धि का वास होता है
- ✓ संतान सुख की प्राप्ति होती है
- ✓ मानसिक शांति मिलती है
- ✓ शरीर और मन में संतुलन आता है
- ✓ आध्यात्मिक उन्नति (spiritual growth) होती है

अर्धनारीश्वर पूजा विधि

अर्धनारीश्वर की पूजा करने की सरल विधि इस प्रकार है -

- ✓ सुबह स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें
- ✓ पीले या लाल आसन पर बैठें
- ✓ अर्धनारीश्वर की मूर्ति या तस्वीर सामने रखें
- ✓ धूप-दीप जलाएं
- ✓ रोली, चंदन, अक्षत चढ़ाएं
- ✓ फूल चढ़ाएं - शिव के लिए बेलपत्र, शक्ति के लिए लाल फूल
- ✓ भोग लगाएं - शिव के लिए भांग-धतूरा, शक्ति के लिए मीठा भोग
- ✓ ₹ॐ अर्धनारीश्वराय नमः₹ मंत्र का जाप करें
- ✓ अंत में आरती करें और क्षमा प्रार्थना करें

वैवाहिक जीवन के लिए विशेष उपाय

अर्धनारीश्वर की पूजा वैवाहिक जीवन के लिए बहुत लाभकारी है -

- ✓ अगर पति-पत्नी में अनबन हो, तो सोमवार के दिन अर्धनारीश्वर की पूजा करें
- ✓ गुरुवार के दिन इस मंत्र का जाप करें - ₹ॐ नमः शिवाय पार्वत्यै नमः₹
- ✓ शिव और पार्वती को एक साथ पीला चंदन और सफेद फूल चढ़ाएं
- ✓ दोनों को एक साथ खीर का भोग लगाएं
- ✓ हर शुक्रवार को माता पार्वती की पूजा करें और हर सोमवार को भगवान शिव की

अर्धनारीश्वर स्तोत्र

भगवान शिव के इस अद्भुत स्वरूप का एक प्रसिद्ध स्तोत्र है -

"वामांके कमलासना भगवती दक्षांके च कैलासपति"

अर्थ - बाईं ओर माता पार्वती (कमलासना) विराजमान हैं और दाईं ओर भगवान शिव (कैलासपति) विराजमान हैं।

आधुनिक जीवन में अर्धनारीश्वर की प्रासंगिकता

आज के समय में अर्धनारीश्वर का संदेश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है -

- ✓ यह लैंगिक समानता (gender equality) का संदेश देता है
- ✓ यह बताता है कि पुरुष और स्त्री दोनों समान हैं
- ✓ यह हमें सिखाता है कि विरोधी दिखने वाली चीजों में भी सामंजस्य (harmony) संभव है
- ✓ यह हमें संतुलन (balance) का महत्व सिखाता है
- ✓ यह बताता है कि हर व्यक्ति के अंदर दोनों ऊर्जाएं हैं और उन्हें स्वीकार करना चाहिए।

शिव केशव स्तोत्रम् का धार्मिक महत्व, पाठ विधि और फल

पिंकी कुंडू

एक ऐसा दुर्लभ स्तोत्र जो शिव और विष्णु दोनों की संयुक्त कृपा दिलाता है। शिव केशव स्तोत्र।

अगर आप शिव और विष्णु दोनों की कृपा चाहते हैं तो इस स्तोत्र का पाठ जीवन बदल सकता है।

शास्त्र कहते हैं जो भक्त श्रद्धा से शिव केशव स्तोत्र का पाठ करता है उसे मृत्यु का भय नहीं सताता।

1. शिव केशव स्तोत्र क्या है शिव केशव स्तोत्र एक अत्यंत पवित्र स्तुति है जिसमें भगवान शिव और भगवान विष्णु दोनों की एक साथ स्तुति की गई है।

*इस स्तोत्र की विशेषता यह है कि इसमें शिव और विष्णु के विभिन्न नामों को एक साथ जोड़कर बताया गया है कि दोनों ही एक ही परम तत्व के दो रूप हैं।

*इस स्तोत्र के रचयिता यमराज माने जाते हैं। इसलिए इसे ₹यमकृत शिव केशव स्तोत्र₹ भी कहा जाता है।

धार्मिक दृष्टि से यह स्तोत्र यह संदेश देता है कि शिव और विष्णु में कोई भेद नहीं है।

जो शिव की पूजा करता है वह विष्णु की भी पूजा करता है और जो विष्णु की पूजा करता है वह शिव की भी पूजा करता है।

2. धार्मिक महत्व इस स्तोत्र का महत्व कई ग्रंथों में बताया गया है।

मुख्य महत्व इस प्रकार माना जाता है

शिव और विष्णु दोनों की संयुक्त कृपा प्राप्त होती है।

भय, रोग और शत्रु बाधा से रक्षा होती है।

मृत्यु का भय कम होता है।

जीवन में शांति और आध्यात्मिक उन्नति मिलती है।

पापों का नाश और पुण्य की वृद्धि होती है।

अंतिम श्लोक में कहा गया है कि जो व्यक्ति इस स्तोत्र के सुंदर नामों की माला का जप करता है, उसे यमराज का भय नहीं रहता।

3. इस स्तोत्र का आध्यात्मिक संदेश इस स्तोत्र का सबसे बड़ा संदेश है कि ईश्वर एक है।

शिव और विष्णु अलग नहीं हैं बल्कि एक ही परम ब्रह्म के दो स्वरूप हैं। इसलिए सनातन धर्म में संप्रदायों का भेद नहीं होना चाहिए।

यह स्तोत्र भक्त को समभाव और एकत्व का ज्ञान देता है।

4. पाठ करने की सही विधि पाठ करने की सरल विधि इस प्रकार है

सुबह स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

भगवान शिव और भगवान विष्णु की तस्वीर या मूर्ति के सामने बैठें।

दीपक और धूप जलाएं।

पहले भगवान गणेश का स्मरण करें।

इसके बाद ध्यान श्लोक पढ़ें।

फिर पूरे शिव केशव स्तोत्र का श्रद्धा से पाठ करें।

अंत में भगवान से प्रार्थना करें।

5. पाठ करने का सही समय इस स्तोत्र का पाठ कई समयों में किया जा सकता है

सबसे शुभ समय

सुबह ब्रह्म मुहूर्त

सोमवार

गुरुवार

एकादशी

प्रदोष काल

महाशिवरात्रि

इन दिनों पाठ करने से विशेष फल मिलता है।

6. पाठ करने के विशेष लाभ नियमित पाठ करने से

मन की अशांति दूर होती है

नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है

आध्यात्मिक शक्ति बढ़ती है

भय और चिंता कम होती है

घर में सुख शांति आती है

7. किसे यह स्तोत्र अवश्य पढ़ना चाहिए

जो लोग मानसिक तनाव में रहते हैं

जिन्हें मृत्यु का भय या नकारात्मक विचार आते हैं

जो शिव और विष्णु दोनों की कृपा चाहते हैं

जो आध्यात्मिक उन्नति चाहते हैं

ऐसे लोगों के लिए यह स्तोत्र बहुत लाभकारी माना जाता है।

8. विशेष नियम

पाठ करते समय मन शांत और श्रद्धा पूर्ण होना चाहिए।

जल्दबाजी में पाठ नहीं करना चाहिए।

शुद्ध उच्चारण के साथ पाठ करना उत्तम माना जाता है।

यदि समय कम हो तो केवल एक बार भी श्रद्धा से पाठ करना लाभदायक होता है।

9. निष्कर्ष शिव केशव स्तोत्र केवल एक स्तुति नहीं है बल्कि यह सनातन धर्म के अद्वैत सिद्धांत का सुंदर संदेश देता है कि शिव और विष्णु एक ही परम सत्य के रूप हैं।

नियमित रूप से इस स्तोत्र का पाठ करने से भक्त को आध्यात्मिक शांति, सुरक्षा और ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है।

।।शिव केशव स्तोत्रम्।।

ध्यानम्।

माधवोमाधवावीशौ सर्वसिद्धिविहायिनौ।
वंदे परस्परात्मानौ परस्परनुतिप्रियौ।।

।।स्तोत्रम् ।।

गोविन्द माधव मुकुन्द हरे मुरारे
शम्भो शिवेश शशिशेखर शूलपाणे।
दामोदराऽच्युत जनार्दन वासुदेव
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।१।।

गङ्गाधरान्धकरिपो हर नीलकण्ठ
वैकुण्ठकैटभरिपो कमठाब्जपाणे।
भूतेश खण्डपरशो मृड चण्डिकेश
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।२।।

विष्णो नृसिंह मधुसूदन चक्रपाणे
गौरीपते गिरिश शंकर चन्द्रचूड।
नारायणाऽसुरनिबर्हण शार्ङ्गपाणे
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।*।।

मृत्युञ्जयोग्र विषमेक्षण कामशत्रो
श्रीकण्ठ पीतवसनाम्बुदनीलशौरे।
ईशान कृत्तिवसन त्रिदशैकनाथ
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।४।।

लक्ष्मीपते मधुरिपो पुरुषोत्तमाद्य
श्रीकण्ठ दिग्वसन शान्त पिनाकपाणे।
आनन्दकन्द धरणीधर पद्मनाभ
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।५।।

सर्वेश्वर त्रिपुरसूदन देवदेव
ब्रह्मण्यदेव गरुडध्वज शंखपाणे।
त्र्यक्षोरगाभरण बालमृगांकमौले
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।६।।

श्रीराम राघव रमेश्वर रावणारे
भूतेश मन्मथरिपो प्रमथाधिनाथ।
चाणूरमर्दन हृषीकपते मुरारे
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।७।।

शूलिन्गिरीश रजनीशकलावतंस
कंसप्रणाशन सनातन केशिनाश।
भर्ग त्रिनेत्र भव भूतपते पुरारे
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।८।।

गोपीपते यदुपते वसुदेवसूनो
कर्पूरगौर वृषभध्वज भालनेत्र।
गोवर्धनोद्धरण धर्मधुरीण गोप
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।९।।

स्थाणो त्रिलोचन पिनाकधर स्मरारे
कृष्णाऽनिरुद्ध कमलाकर कल्मषारे।
विश्वेश्वर त्रिपथगार्द्रजटाकलाप
त्याज्याभटाय इति सन्ततमामनन्ति।।१०।।

अष्टोत्तराधिकशतेन सुचारुनाम्नां
संधर्भितां ललितरत्नकदम्बकेन।
सन्नामकां दृढगुणां द्विजकण्ठगां यः
कुर्यादिमां स्रजमहो स यमं न पश्येत।।११।।

।।इति श्री यमकृत श्री शिवकेशव स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

एक बहुत ही सुंदर और रोमांचक प्रसंग

पिंकी कुंडू

एक संत के श्री मुख से सुना था आप सभी के मध्य प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जब हनुमान जी महाराज लंकेश की लंका को जला रहे थे तब एक बहुत ही विस्मयी घटना हुई लंका में आग लगती और अदृश्य हो जाती लंका को बिना नुक्सान पहुचाये तब महावीर हनुमान जी चिंतित हो उठे की क्या रावण द्वारा अर्जित पूण्य इतने प्रबल है ! अथवा मेरी भक्ति में ही किसी प्रकार की कमी है ! जब अपने आराध्य प्रभु राम का सुमिरन किया तब भगवान श्री राम की कृपा से ज्ञात हुआ की हे हनुमान जिस लंका को तुम जला रहे हो वह माया रचित है प्रतिबिम्ब है असली लंका तो माँ पार्वती के हाथों शनिदेव की दृष्टि से पूर्व में ही ध्वस्त हो चुकी है चुकी शनि देव लंका के तल में है इसी लिए ये बिम्ब लंका नष्ट नहीं हो रही तब हनुमान जी महाराज ने जाकर शनिदेव को रावण की कैद से मुक्त करते है शनि देव के बाहर आते ही ज्यो ही उनकी दृष्टि उस बिम्ब लंका पर् पड़ी वः धू धू कर जलने लगी चुकी माँ पार्वती के मन में लंका को स्वयं ध्वस्त करने का दुःख था उसी फलस्वरूप यह बिम्ब जो माँ पार्वती के मन में था वह रावण को प्राप्त हुआ था

उसी प्रकार मनुष्य जब अपने सुकर्म भूल कर दुष्कर्म में प्रवित्त हो माया रुपी सुखों की रचना कर उन्ही में डूब जाता है सुमिरन भूल जाता है तब शनि देव उसे अपना अस्तित्व और कर्म याद करवाते है इसी लोए उन्हें न्यायाधीश कहा जाता हैं।

कर्मों की सजा

पिंकी कुंडू

एक भिखारी प्रतिदिन एक ही दरवाज़े पर जाकर भीख माँगता था। जैसे ही वह आवाज़ लगाता, घर का मालिक बाहर आता और उसे भला-बुरा कहने लगता—"मर क्यों नहीं जाते? काम क्यों नहीं करते? जीवन भर भीख ही माँगते रहोगे!" कभी-कभी क्रोध में आकर उसे धक्का भी दे देता।

किन्तु भिखारी के होंठों पर केवल एक ही वाक्य रहता—

"ईश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा करें।"

एक दिन सेठ अत्यंत क्रोधित था। व्यापार में भारी हानि हुई थी। उसी समय भिखारी भीख माँगने आ पहुँचा। सेठ ने बिना कुछ सोचे एक पत्थर उठाकर उसके सिर पर दे मारा। रक्त बहने लगा, पर भिखारी ने शांत स्वर में फिर वही कहा—

"ईश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा करें।"

यह सुनकर सेठ का क्रोध कुछ शांत हुआ, पर मन में जिज्ञासा जागी—इतना अपमान सहकर भी यह व्यक्ति बद्दुआ क्यों नहीं देता? वह चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

दिन भर सेठ ने देखा—कोई उसे तिरस्कार से देखता, कोई गालियाँ देता, कोई दुत्कारता; पर वह हर बार यही कहता—"ईश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा करें।"

संध्या ढलने पर भिखारी अपनी झोंपड़ी में पहुँचा। वहाँ एक जर्जर खाट पर उसकी वृद्ध पत्नी लेटी थी। उसने कटोरे में झाँका—उसमें आधी बासी रोटी थी। उसने व्यथित स्वर में पूछा, "बस इतना ही? और यह सिर कैसे फूट गया?"

भिखारी ने शांत भाव से कहा, "आज किसी ने कुछ नहीं दिया। पत्थर भी पड़े। पर यह सब हमारे अपने कर्मों का फल है। स्मरण है तुम्हें—कुछ वर्ष पूर्व हम कितने संपन्न थे?"

वृद्धा की आँखों से आँसू बह निकले। "हाँ, स्मरण है। एक अंधा भिखारी हमारे द्वार आता था। हम उसका उपहास उड़ाते, रोटी के स्थान पर कागज़ रख देते, उसे धक्का देते। एक बार तो मैंने उसे राह भी नहीं दिखाई और वह नाली में गिर पड़ा। उसका कटोरा भी फेंक दिया था। वह केवल इतना कहता था—'तुम्हारे पापों का हिसाब ईश्वर करेंगे।'"

भिखारी ने गहरी साँस ली, "आज वही हिसाब हमारे सामने है। पर मैं किसी को बद्दुआ नहीं देता। जिसने जैसा किया, वैसा पाएगा। मैं नहीं चाहता कि कोई और हमारे समान दुःख भोगे। इसलिए मेरे मुख से केवल दुआ ही निकलती है।"

सेठ यह सब सुन रहा था। उसके हृदय में पश्चात्ताप की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। उसने देखा—दोनों ने आधी रोटी बाँटी, ईश्वर को प्रणाम किया और संतोषपूर्वक सो गए।

अगले दिन जब भिखारी फिर उसके द्वार आया, सेठ पहले से प्रतीक्षा कर रहा था। उसने आदरपूर्वक रोटियाँ दीं और विनम्र स्वर में कहा, "मुझे क्षमा करें, मुझसे भूल हो गई।"

भिखारी ने मुस्कुराकर कहा, "ईश्वर तुम्हारा भला करें," और आगे बढ़ गया।

उस दिन सेठ समझ गया—मनुष्य केवल दुआ या बद्दुआ दे सकता है, पर सच्चा न्याय तो ईश्वर ही करता है। कर्मों का लेखा-जोखा कभी नष्ट नहीं होता। इस जन्म में न मिले तो अगले जन्म में अवश्य मिलता है।

अतः जहाँ तक संभव हो, शुभ कर्म करें। ईश्वर अदृश्य अवश्य है, पर उसका न्याय अचूक है।

बार काउंसिल चुनाव को लेकर मतदान पार्टियों का प्रशिक्षण 9 व 12 मार्च को

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को दिए आवश्यक निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 7 मार्च। पंजाब एवं हरियाणा बार काउंसिल के चुनाव-2026 के सफल एवं सुचारू संचालन को लेकर जिला प्रशासन द्वारा तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि माननीय पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार बार काउंसिल के चुनाव 18 मार्च को करवाए जाएंगे, जिनका संचालन जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी और व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से मतदान पार्टियों का प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। इसके तहत 9 मार्च तथा 12 मार्च 2026 को प्रातः 11 बजे से संवाद भवन, झज्जर में मतदान पार्टियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी नियुक्त मतदान कर्मियों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए, ताकि उन्हें चुनाव प्रक्रिया, मतदान व्यवस्था तथा अन्य आवश्यक प्रक्रियाओं की विस्तृत जानकारी दी जा सके। उन्होंने कहा कि चुनाव से जुड़े सभी कार्य निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार समयबद्ध तरीके से पूरे किए जाएं, ताकि चुनाव प्रक्रिया शांतिपूर्ण और निष्पक्ष रूप से संपन्न हो सके।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि चुनाव से संबंधित व्यवस्थाओं को लेकर प्रशासन पूरी तरह से सतर्क है और सभी आवश्यक प्रबंध सुनिश्चित किए जा रहे हैं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि चुनाव प्रक्रिया के दौरान किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए।

सेवा सुरक्षा पोर्टल पर अनुबंध कर्मचारियों का डाटा तुरंत अपडेट करें : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

ओटीपी, मोबाइल नंबर व कर्मचारी विवरण में गड़बड़ियों को प्राथमिकता से ठीक करने के निर्देश

झज्जर, 7 मार्च। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिला के सभी विभागाध्यक्षों, बोर्डों, निगमों व संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे सेवा सुरक्षा पोर्टल पर अनुबंध कर्मचारियों के डाटा को तुरंत अपडेट और सत्यापित करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि यह कार्य हरियाणा अनुबंध कर्मचारी (सेवा सुरक्षा) अधिनियम, 2024 तथा नियम, 2025 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

उपायुक्त ने बताया कि राज्य सरकार के संज्ञान में आया है कि सेवा सुरक्षा पोर्टल पर अनुबंध कर्मचारियों के डाटा में कई प्रकार की अनियमितताएं सामने आ रही हैं। इनमें ओटीपी प्राप्त करने में समस्या, मोबाइल नंबर का गलत दर्ज होना या बदल जाना, परिवार पहचान पत्र (फैमिली आईडी) में त्रुटियां तथा कर्मचारियों और आहरण एवं वितरण अधिकारियों (डीडीओ) के विवरण का सही ढंग से दर्ज न होना शामिल है।

उन्होंने कहा कि सभी विभाग पात्र अनुबंध कर्मचारियों के डाटा की गंभीरता से जांच करें और यदि किसी कर्मचारी को ओटीपी या अन्य तकनीकी समस्या का सामना करना पड़ रहा है तो संबंधित विभागाध्यक्ष मामले की जांच कर निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करें।

डीसी ने निर्देश दिए कि सभी विभाग अद्यतन कर्मचारी पहचान संख्या, विशिष्ट वेतन कोड तथा सेवा से संबंधित पूरी जानकारी के साथ पात्र अनुबंध कर्मचारियों की सही और अद्यतन सूची निर्धारित प्रारूप में तैयार करें। भाग-1 के अंतर्गत आने वाले पात्र अनुबंध कर्मचारियों का डाटा हरियाणा कौशल रोजगार निगम (एचकेआरएन) को भेजा जाएगा, जबकि भाग-2 के कर्मचारियों का डाटा खजाना एवं लेखा विभाग को भेजा जाएगा।

उन्होंने अधिकारियों से कहा कि राज्य सरकार द्वारा जारी इन निर्देशों का समयबद्ध और सख्ती से पालन सुनिश्चित करें, ताकि सेवा सुरक्षा पोर्टल का संचालन सुचारू रूप से किया जा सके और पात्र अनुबंध कर्मचारियों को योजनाओं का लाभ समय पर मिल सके।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर तलाव गांव में अस्मिता (ASMITA) लीग के तहत महिला एथलेटिक्स प्रतियोगिता आज

जिला युवा अधिकारी बृजेश कौशिक ने दी जानकारी

झज्जर,07 मार्च। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जिले में महिलाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अस्मिता(ASMITA) लीग के तहत महिला एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन रविवार 8 मार्च को किया जाएगा। यह प्रतियोगिता सुबह 8 बजे से गांव तलाव स्थित खेल परिसर में आयोजित होगी।

जिला युवा अधिकारी बृजेश कौशिक ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रतियोगिता में 100 मीटर, 200 मीटर और 400 मीटर दौड़ स्पर्धाएं आयोजित की जाएंगी। इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न आयु वर्ग की महिला खिलाड़ी भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकेंगी।

उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को MYBharat Portal (mybharat.gov.in) पर रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य है।

यह आयोजन माय भारत, भारतीय खेल प्राधिकरण और जिला खेल विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। प्रतियोगिता को सुव्यवस्थित बनाने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में स्कूल, कॉलेजों, ग्रामीण क्षेत्रों, स्वयं सहायता समूहों, आंगनवाड़ी केंद्रों और विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़ी लड़कियों और महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

जिला युवा अधिकारी ने जिलाभर बालिकाओं और महिलाओं से अधिक से अधिक संख्या में प्रतियोगिता में भाग लेने का आह्वान किया है, ताकि वे खेलों के माध्यम से अपनी प्रतिभा को निखार सकें और अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को उत्साहपूर्वक मना सकें।

ई-ग्राम स्वराज गांव की सरकार को बना रहा पारदर्शी : डॉ. वीरेन्द्र

बेरी स्थित बीडीपीओ कार्यालय में सरपंचों व ग्राम सचिवों की दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित

बेरी(झज्जर),07 मार्च।

गांव की सरकार अर्थात पंचायत के कामकाज का डिजिटलीकरण पारदर्शिता का आधार बन रहा है। सरपंचों और ग्राम सचिवों को ई-ग्राम स्वराज सहित विभिन्न पोर्टलों के उपयोग में सिद्धहस्त बनना होगा। सरकार ने कई महत्वपूर्ण डिजिटल पोर्टल शुरू किए हैं, जिनके माध्यम से योजनाओं की जानकारी, मॉनिटरिंग और कार्यों का रिकॉर्ड ऑनलाइन किया जाने लगा है। ये बात हरियाणा ग्रामीण विकास संस्थान के निदेशक डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान ने कही। वे खंड पंचायत एवं विकास कार्यालय बेरी में आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि सरपंचों और ग्राम सचिवों को संबोधित कर रहे थे। खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी राजाराम ने डॉ. चौहान का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया।

निदेशक डॉ. चौहान ने सरपंचों और ग्राम सचिवों से आह्वान किया कि वे सरकार द्वारा शुरू किए गए डिजिटल पोर्टलों का सही और प्रभावी उपयोग करें। इन पोर्टलों के माध्यम से पंचायतों के विकास कार्यों, योजनाओं की प्रगति और वित्तीय जानकारी को पारदर्शी तरीके से दर्ज किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि डिजिटल प्रणाली अपनाने से कार्यों में पारदर्शिता बढ़ती है, समय की बचत होती है और योजनाओं की निगरानी भी बेहतर ढंग से हो पाती है। यदि पंचायत प्रतिनिधि इन पोर्टलों का नियमित और जिम्मेदारी के साथ उपयोग करें तो गांवों के विकास कार्यों में तेजी आएगी और आम लोगों तक सरकारी योजनाओं का लाभ समय पर पहुंच सकेगा।

उन्होंने कहा कि महिलाओं के स्थान पर उनके पुरुष जहां कहीं प्रॉक्सी सरपंच की भूमिका निभा रहे हैं, उसे कड़ाई से रोकना होगा। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में सरकार महिला शसक्तीकरण को बढ़ावा दे रही है। सरकार द्वारा ग्रामीण विकास के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं और इन योजनाओं का लाभ गांव के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना बहुत आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि सरपंच और ग्राम सचिव पंचायत व्यवस्था की मजबूत कड़ी हैं और उनकी सक्रिय भूमिका से ही योजनाओं का सही क्रियान्वयन संभव है।

इस बीच बीडीपीओ राजाराम ने बताया कि इस दो दिवसीय कार्यशाला में सरपंचों और ग्राम सचिवों को सरकार की विभिन्न योजनाओं के साथ-साथ ई-ग्राम स्वराज, पी एफ एम एस और स्वच्छ भारत मिशन जैसे डिजिटल पोर्टलों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि इन पोर्टलों के माध्यम से पंचायतों के विकास कार्यों की ऑनलाइन एंट्री, मॉनिटरिंग और रिपोर्टिंग आसानी से की जा सकती है। इस कार्यशाला में सरपंचों को ग्राम पंचायत विकास योजना ओर स्वच्छ भारत मिशन और विकसित भारत जी राम जी स्कीम के बारे में विस्तार से चर्चा की गई।

इस अवसर पर डी पी एम भूपेश कुमार, प्रोजेक्ट ऑफिसर स्वच्छ भारत मिशन सुशील कुमारऔर प्रोजेक्ट ऑफिसर, जीरामजी सुनील कुमार भी मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

युवा महिलाओं को सम्मानित करेंगे विधायक पूरन प्रकाश

परिवहन विशेष न्यूज

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित किया जाएगा सम्मान समारोह संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित

मथुरा बृज यातायात एवं पर्यावरण जनजागरूकता समिति रजि उत्तर प्रदेश संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने कहा हमारी समिति समाज के लिए सराहनीय काम करने वाले व्यक्तियों को समय-समय पर सम्मान करती रहती है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च को आयोजित किया जाएगा समिति की तरफ से सम्मान समारोह इस सम्मान समारोह में अलग-अलग क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने वाली युवतियों को दिया जाएगा सम्मानित। महिला प्रदेश अध्यक्ष श्वेता शर्मा ने कहा इस महिला अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर गहन विचार विमर्श के बाद 6 युवक्तियों को सम्मान समारोह में शामिल किया गया है जिनके द्वारा समाज के लिए सराहनीय कार्य के लिए उनका सम्मान किया जाएगा। 1 :नम्रता सिंह को संगीत क्षेत्र में, 2: शिवांगी चौधरी पत्रकार (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) पत्रकारिता के माध्यम से समाज के गंभीर मुद्दे को उठाकर न्याय दिलवाना, 3 अंकित शर्मा के द्वारा वंचित समाज के बच्चों को निशुल्क शिक्षा देने के लिए, 4 :अंजलि मिश्रा के द्वारा अपनी पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को लगातार उठकर हल करवाना। 5 : मांडवी चौधरी के द्वारा नया स्टार्टअप शुरू करके लोगों को रोजगार देना 6 : पूजा वर्मा साधारण

बीमा क्षेत्र में सराहनीय योगदान देने के लिए सम्मानित किया जायेगा।

फोटो परिचयः 1 :नम्रता सिंह को संगीत क्षेत्र में, 2: शिवांगी चौधरी पत्रकार (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) पत्रकारिता के माध्यम से समाज के गंभीर मुद्दे को उठाकर न्याय दिलवाना, 3 अंकित शर्मा, 4 :अंजलि मिश्रा 5 : मांडवी चौधरी 6 : पूजा वर्मा

हरियाणा का अब तक का सबसे बड़ा बजट किया गया पेश, विकास की गति होगी और तेज : रणबीर सिंह गंगवा

हरियाणा हाँसी : राजेश सलूजा

हरियाणा सरकार के कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बतौर वित्त मंत्री प्रदेश का अब तक का सबसे बड़ा बजट पेश किया है। यह बजट प्रदेश के हर वर्ग और क्षेत्र के लोगों के विकास व कल्याण को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है और इससे हरियाणा में विकास की गति और तेज होगी।

श्री रणबीर गंगवा शनिवार को हांसी स्थित भाजपा कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे। कैबिनेट ने कहा कि चुनाव से पहले प्रदेश की जनता से किए गए वादों को भाजपा सरकार तेजी से पूरा कर रही है। उन्होंने बताया कि लाडो लक्ष्मी योजना लागू हो चुकी है और इसके लिए 5000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। शुरुआत में एक लाख रुपए वार्षिक आय वाली महिलाओं को योजना में शामिल किया गया था, लेकिन अब इसका दायरा बढ़ाकर एक लाख 80 हजार रुपए वार्षिक आय वाली महिलाओं को भी इसमें शामिल कर लिया गया है।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। सरकारी अस्पतालों में भी निजी अस्पतालों की तर्ज पर आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। सात जिलों के सरकारी अस्पतालों में एमआरआई तथा 18 जिलों के अस्पतालों में अल्ट्रासाउंड की सुविधा शुरू की जा चुकी है। इसके अलावा अस्पतालों में कई अन्य आधुनिक सुविधाएं भी उपलब्ध करवाई जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि वर्तमान समय शिक्षा का युग है और युवाओं को मेरिट के आधार पर पारदर्शी तरीके से सरकारी नौकरियां मिल रही हैं। इससे युवाओं में पढ़ाई के प्रति रुझान बढ़ा है और गरीब से गरीब परिवार के बच्चे भी उच्च पदों तक पहुंच रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में 250 सीएम श्री स्कूल खोले जाएंगे ताकि बच्चों को शुरुआत से ही अंग्रेजी माध्यम में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके। इसके साथ ही समय की मांग के अनुरूप डिजिटल कॉलेज भी खोले जाएंगे, जहां युवाओं को एआई जैसी आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी जाएगी। कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि नवगठित हांसी जिले को आधुनिक मॉडल जिले के रूप में विकसित किया जाएगा। प्रदेश में हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा नए सेक्टर विकसित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि प्रदेश के सभी 23 जिले राष्ट्रीय राजमार्गों से जुड़ चुके हैं। राज्य में 3500 ऐसी सड़कें थीं जिनकी चौड़ाई 12 फुट थी, जिनमें से 1275 सड़कों को 18 फुट किया जा चुका है और शेष सड़कों की चौड़ाई भी बढ़ाई जाएगी। उन्होंने कहा कि लोक निर्माण विभाग की किसी भी सड़क की चौड़ाई 18 फुट से कम नहीं रहने दी जाएगी तथा 5000 किलोमीटर लंबाई की सड़कों का कारपेट किया जाएगा। इसके अलावा प्रदेश में नए विश्रामगृह भी बनाए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि बजट में जन स्वास्थ्य विभाग के बजट में भी बढ़ोतरी की गई है ताकि नागरिकों को पर्याप्त और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया जा सके। इसके लिए आवश्यकता अनुसार जल घरों का निर्माण किया जाएगा। प्रदेश में 446 ऐसे पानी के टैंक चिन्हित किए गए हैं जिनमें धरातलीय पानी मिलने की समस्या थी। इन सभी टैंकों को दुरुस्त किया जाएगा, जिनमें से अब तक 44 टैंकों को ठीक किया जा चुका है।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों को भी शहरी तर्ज पर सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी। इस दिशा में राज्य सरकार द्वारा ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। प्रदेश के 10 हजार से अधिक आबादी वाले 150 गांवों को महाग्राम योजना में शामिल किया गया है। बजट में न्यूनतम मजदूरी बढ़ाने का भी प्रावधान किया गया है।

इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक सैनी, सतवीर वर्मा, बिजेंद्र लोहान, आभास अग्रवाल, धर्मवीर रतेरिया, ओमपाल यादव, रामेहर बरागी, बलजिंदर यादव सहित भारतीय जनता पार्टी के अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मुक्ति के दाता संत रामप्रकाश जी महाराज जी की तीसरी पुण्यतिथि पर अगम मार्ग धाम बनभौरी में आज ऐतिहासिक सत्संग व भंडारे का आयोजन किया गया

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाली/हिसार (राजेश सलूजा) : सत्संग व भंडारे का आयोजन संत अमर प्रकाश जी महाराज जी के द्वारा किया गया

और दिल्ली हरियाणा पंजाब राजस्थान जम्मू कश्मीर उतर प्रदेश व उत्तराखंड से हजारों की संख्या में श्रद्धालु अगम मार्ग धाम बनभौरी दरबार में पहुंचे व सभी भगतो ने श्रद्धा के सुमन अर्पित किए

महाराज संत अमर प्रकाश जी महाराज जी ने बड़े ही सुशोभित भजनों व शब्दों से सभी महापुरुषों का गुणगान किया और संदेश देते हुए महाराज जी ने कहा कि जब तक सूरज चांद रहेगा संत रामप्रकाश जी महाराज का नाम रहेगा

इस मौके पर गुरु रविदास सभा के प्रधान राजकुमार रंगा महासचिव सुनील भानखोड कोषाध्यक्ष विरेंदर बरवाला दया राम विक्रम रंगा प्रेम छाछीया रामफल रंगा ने महाराज जी को शोल भेट की।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय केंद्र में रंगारंग कार्यक्रम आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

दिनाँक 7-3-2026 के शुभ अवसर पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के पश्चिम विहार (ए-3/15) केंद्र में बहुत ही सुंदर और रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सोनिया बहन द्वारा संगीतमय योगा अभ्यास से की गई। उपस्थित सभी महिलाओं ने योगा अभ्यास का बहुत आनंद उठाया.. उसके बाद रेखा बहन और सुमन बहन द्वारा बाबा के सुन्दर गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का आरंभआए हुए सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि के रूप में आए सुश्री अरुणा जाधव (बी जे पी, मीडिया), श्रीमती नरेंद्र कौर (सामाजिक कार्यकर्ता), सुश्री जयश्री (आम आदमी पार्टी कार्यकर्ता) का दुपट्टा और पौधा देकर सम्मान केंद्र की अध्यक्षा बी के सुषमा दीदी, बी के सरिता दीदी और बी के रमेश भाई द्वारा किया गया.. कुमारी नव्या द्वारा बहुत ही सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में बहुत ही सुंदर प्रस्तुति प्रणव मलिक भाई के सरस्वती गीत की रही। बी के राजयोगिनी हेमा दीदी ने महिलाओं को शक्ति और विश्वास का आधार बताया। सृष्टि की रचना और संचालन का उतरदायित्व भी महिलाओं पर ही है। उन्होंने बताया कि परमात्मा ने नर को नारायण और स्त्री को लक्ष्मी बनाने की प्रेरणा देकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की। औरत की समाज में भूमिका एक दायित्व की है। संस्कार और मूल्यों को बच्चों के जीवन में देने का प्रयास एक माँ के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। महिला के विभिन्न रूपों दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के गुणों से परिचित करवाया। स्त्री को स्वर्ग का द्वार खोलने का दायित्व दिया गया है। रेणु बहन ने नारी पर स्वलिखित कविता प्रस्तुत की। प्रियंका द्वारा नारी शक्ति पर बहुत सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किया गया।

जन- जन का कल्याण करे ये शिव की शक्ति नारी ₹

नाटिका को केंद्र के विद्यार्थियों ने बहुत ही रोमांचक ढंग से प्रस्तुत किया। श्रीमती जयश्री, जो ₹समन्वय एकता मंच₹ की संस्थापक हैं। उन्होंने प्यार, सम्मान को लेने और देने की एक प्रक्रिया बताया जिसकी आवश्यकता सभी को है। श्रीमती नरेंद्र कौर ने नारी की शक्ति को मुख्य बताया. जो ₹सुरताज₹ नाम से एक सामाजिक संस्था चलातीहैं। संघर्ष और सफलता को जीवन में अपनाने के लिए हिम्मत और आत्मविश्वास की आवश्यकता है।

संजीव भाई ने स्त्री शक्ति के सम्मान में अपने विचार रखे..

शिखा भारद्वाज (निगम पार्षद, शकूरबस्ती) द्वारा सभी को महिला दिवस की शुभकामनाएं दीं। नारी की समाज में भूमिका और उसके व्यक्तित्व, घर की जिम्मेदारी, संबंधों की संभाल को अपने विचारों में स्पष्ट किया।

जीवन शैली में हो रहे परिवर्तन में एक नारी की भूमिका को बहुत महत्वपूर्ण बताया। अरुणा बहन ने मंच से सभी को महिला दिवस की शुभकामनाएं दी। केंद्र की संस्थापित बी के सुषमा दीदी जी ने शुभकामनाएं देने के साथ-साथ नारी को संघर्ष में संयम, आशावादी और दया की भावना का आधार बताया। बी के रमेश भाई जी ने कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों और अन्य सभी का धन्यवाद किया।

रिपोर्ट
डॉ रचना ग्रोवर

9.5 लाख की ठगी करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार , नगद मोबाइल व अन्य सामान बरामद

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। जीएसटी अधिकारी बताकर व्यापारी से 9.5 लाख रुपये ठगने वाले दो शातिर अभियुक्तों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से घटना में प्रयुक्त चार पहिया वाहन, मोटरसाइकिल, मोबाइल फोन सहित 1 लाख 80 हजार रुपये नगद भी बरामद किए हैं। पुलिस के अनुसार वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गोरखपुर द्वारा अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना राजघाट में दर्ज मुकदमा संख्या 17/2026 से संबंधित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। पकड़े गए अभियुक्तों की पहचान हैदर अली पुत्र सब्बीर अली और मुस्तफा अली पुत्र सोहराब अली के रूप में हुई है। पूछताछ में सामने आया कि 30 जनवरी 2026 को एक व्यापारी 9 लाख 50 हजार रुपये बैंक में जमा कराने जा रहा था। इसी दौरान आरोपियों ने खुद को जीएसटी अधिकारी बताते हुए व्यापारी को रोक लिया और पैसे से संबंधित दस्तावेज दिखाने के बहाने मौका देखकर रुपये से भरा बैग लेकर मोटरसाइकिल से फरार हो गए। पीड़ित की तहरीर के आधार पर राजघाट थाने में मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस ने अभियुक्तों के पास से 1 लाख 80 हजार रुपये नगद, घटना में प्रयुक्त एक चार पहिया वाहन, एक मोटरसाइकिल, दो मोबाइल फोन, एक डोंगल तथा दो आरसी कार्ड बरामद किए हैं। गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर मुकदमे में विभिन्न धाराओं की बढ़ोतरी भी की गई है। पुलिस के अनुसार पकड़ा गया अभियुक्त हैदर अली के खिलाफ मध्यप्रदेश में भी चोरी से संबंधित एक मुकदमा दर्ज है। दोनों आरोपियों के खिलाफ अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

अस्तित्व की हुंकार: आधुनिक चुनौतियों के बीच निखरती नारी शक्ति

शोभा पवार (शिक्षिका)
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

आज का अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं, बल्कि सदियों की चुप्पी को तोड़कर उभरी उस बुलंद आवाज़ का प्रतीक है, जो अब रुकने वाली नहीं है। यह दिन उस संघर्ष, साहस और संकल्प का प्रतीक है, जिसने नारी को सीमाओं की परिधि से निकालकर संभावनाओं के असीम आकाश तक पहुँचा दिया है।

इक्कीसवीं सदी की महिलाओं ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और आत्मविश्वास के बल पर उन बेड़ियों को पिघला दिया है, जो कभी उसे कमतर आँकती थीं। आज महिलाएँ केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि कॉर्पोरेट, बोर्डरूम से लेकर अंतरिक्ष अभियानों तक नेतृत्व कर रही हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे जटिल क्षेत्रों में भी वे अपनी मेधा और क्षमता का लोहा मनवा रही हैं।

प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा की पंक्तियाँ नारी की संवेदनशीलता और आंतरिक शक्ति को गहराई से व्यक्त करती हैं—

मैं नीर भरी दुःख की बदली,
स्पंदन में चिर निस्पंद बसी।

हालाँकि आधुनिक डिजिटल युग ने नारी के सामने नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं। साइबर हिंसा, मानसिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं का बोझ आज की वास्तविकताएँ हैं। किंतु इन परिस्थितियों के बीच भी आधुनिक नारी टूटती नहीं, बल्कि हर चुनौती को अपनी शक्ति में बदलकर और अधिक सशक्त होकर उभरती है।

अब समय आ गया है कि समाज नारी के सशक्तिकरण की चर्चा करने के स्थान पर उसे वह अधिकार और सम्मान प्रदान करे, जिसकी वह सदैव अधिकारी रही है। जब तक समाज का दृष्टिकोण पितृसत्तात्मक सोच से मुक्त होकर वास्तविक समानता की ओर नहीं मुड़ेगा, तब तक कोई भी राष्ट्र पूर्ण प्रगति का दावा नहीं कर सकता।

नारी आज केवल सृष्टि की जननी ही नहीं, बल्कि बदलते हुए विश्व की सबसे सशक्त वास्तुकार भी है—वह समाज की दिशा निर्धारित करती है, संस्कारों की नींव रखती है और भविष्य की पीढ़ियों को आकार देती है।

अंत में मैं यही संदेश देना चाहूँगी—

हौसलों के तरकश में कोशिश का वह तीर ज़िंदा रख,
हार जाए चाहे ज़िंदगी में सब कुछ,
मगर फिर से जीतने की उम्मीद ज़िंदा रख।

लेखिका- शोभा पवार (शिक्षिका)

8 मार्च अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर - विभिन्न जन समुदाय के विचारों में महिला दिवस

रिपोर्टिंग स्वतंत्र पत्रकार हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

महिला दिवस 8 मार्च को पूरी दुनिया में मनाया जाता है। यहां अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारीशक्ति का सम्मान व उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में मील का पत्थर साबितहोगा। जो सदियों से समाज राष्ट्रऔर परिवार को चलाती आ रही है। भारत के लिए तो बहुत गौरव की बात है कि वर्तमान में यहां की राष्ट्रपति महिला ही है। इस नए जमाने में हर एक क्षेत्र में महिलाऐं आगे बढ़ रही है। हमारे शहर इन्दौर की बात करें तो सफाई दीदियों ने बहुत काम किए और अभी भी कर रही है, तभी तो स्वच्छता में महागुरु इन्दौर बना हुआ है। महिला हमेशा से संघर्षशील रही है, तभी तो पूरे विश्व में वह सशक्त भूमिका निभा रही हैं। उनका आदर मान सम्मान हम सभी का कार्यत्व भी है और फर्ज भी उन्हें आसमान में खुलकर उड़ान भरने दो। अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर विभिन्न जनसमुदाय के विचारों में महिला दिवस ----

इस महिला दिवस पर मेरी कामना है, कि आप सभी महिलाएं साहसी बने जो भी ख्वाहिश हैं उन्हें हासिल करें ।आप में एक अद्भुत शक्ति हैं , आज भी हर दिन की तरह आप अपनी शक्ति करुणा और साहस के लिए प्रशंसा की पात्रहैं । जैसे-जैसे महिलाएं शक्ति प्राप्त करेगी , सारी परेशानियां दूर होती जाएगी । समाज देखेगा भी देखेंगा कि महिलाएं क्या कर सकती हैं, वह और भी ऊर्जावान बनेगी । उनके अंदर ऊर्जा जागृत होगी , कुछ करने की कुछ कर दिखाने की ।आज सभी मध्यम वर्ग की महिलाएं भी आगे बढ़ाने की कोशिश करेगी,

आज की हर महिला एक्टिव है हर एंगल से वह कुछ भी कर सकती है बस थोड़ा साहस की जरूरत है और वहां कामयाबी हासिल कर लेगी।

गृहणी - अल्पना जैन तिलक नगर इन्दौर

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल महिलाओं के अधिकारों और उपलब्धियों का उत्सव ही नहीं है, बल्कि यह उनके बौद्धिक, रचनात्मक और सांस्कृतिक योगदान को भी स्मरण करने का अवसर है। साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सदैव महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने अपने अनुभवों, संवेदनाओं और संघर्षों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त कर समाज को नई दृष्टि दी है।

शिक्षिका और साहित्यकार - स्वाति सिंह राठौर साहिबा महेश्वर

जहाँ नारियो की प्रतिष्ठा होती हैं, वहीं सम्मान होता है, जहाँ नारियाँ पूजी जाती है, वहीं देवताओं का वास होता है। अक्षरशः सत्य बात है, बिना नारियों के सम्मान के, नारियों के प्रतिष्ठा के, घर नहीं बनता, परिवार, मानव समाज में सुखद जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। मानव समाज को जोड़ने मानव समाज को समृद्ध और संस्कारवान बनाने का यदि किसी ने सार्थक काम किया है तो वह है नारी शक्ति ही है।

नारी को शक्ति स्वरूपा कहा गया है, तो इनको यूँ नहीं कहा गया है। इनके पास शक्ति के साथ क्षमा भी है। पीड़ा के साथ धैर्यता भी है। सर्जक के साथ संहारक भी हैं। माता के साथ सम्पूर्ण नाता भी है। यहां सही में रिश्तों की अटूट विश्वास कहा जा सकता है।

शिक्षक - अशोक पटेल "आशु"

तुस्मा-शिवरीनारायण (छत्तीसगढ़)

'घर की चार दिवारी से निकल हर क्षेत्र में महिलाओं ने सबला होकर अपनी विशेष भूमिका निभा रही है । आत्म विश्वास के साथ देशभक्ति तो महकमो में कर्तव्य निष्ठा को अंजाम ईमानदारी से देकर घर परिवार की भूमिका वह कुशल गृहणी के रूप में निभा रही है। देवी स्वरूप का दर्जा प्राप्त वर्तमान युग में पुरुषार्थ का साक्षात प्रतीक बन चुकी है छोटी बालिका से बेटी व बहू के बाद मां बन , आज अपने कर्तव्य हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है महिला दिवस 1 दिन का नहीं आपित प्रतिदिन उन्हें यथा उचित सम्मान देने की जरूरत है पूर्ण मनोयोग से खुलकर उनके विचारों तथा जायज मांगों को मान सम्मान देने की जरूरत है । उन्होंने पहले के दौर में पुरुष प्रधान समाज पैरों की जूती मानता था और नशा कर उन्हें प्रताड़ित करने की घटनाएं बहुत होती थी। वर्तमान में उन्होंने कानून ने निडर बना दिया है, अब वह मारपीट व अन्य असमाजिक गतिविधियों का खुल कर विरोध करती है। अब नारी के साहस को कोई नज़र अंदाज़ नहीं करें । महिला दिवस को सार्थक बनाने में एकता के साथ महिलाएं कमजोर महिलाओं को भी उत्साह से उद्यमी व स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी ऐसी अपेक्षा है।

शिक्षक व लेखक - प्रदीप शर्मा महेश्वर मध्य-प्रदेश

21वीं सदी की नई पीढ़ी के महिलाएं अब अबला, बेचारी,

आंसू बहाने वाली नहीं रही है। अब पढ़ रही है आगे बड़ रही है। कभी पुरुषों प्रधान समाज में मानसिक, रूढ़िवादी की गुलाम जागीरों जकड़ी महिलाए, कुछ हद तक पुरुष के पद चिन्हों पर चली और अब कंधे से कंधा मिलाकर आगे बड़ी बढ़ रही है। देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

आज की नारी आत्मनिर्भर होकर देश के श्रेष्ठतम संगठनों, संस्थाओं, दलों, पदो पर रहकर श्रेष्ठ तरह से संचालन कर रही हैं। लेकिन अभी भी उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता, स्वयं निर्णय लेने की आजादी कम ही मिली है। क्योंकि फिजाओं फैले जहर अर्थात इंसान के रूप में भेड़िए, राक्षस प्रवृत्ति के लोग आस्था, विश्वास में लेकर अभी भी इनका मानसिक, शारीरिक शोषण कर उनके 36 टुकड़े कर बोर में भरकर फेंक रहे हैं।

अतः आज की आधुनिक युवा, सशक्त, मजबूत और आत्मनिर्भर महिलाओं को इन आस्तीन के सांपों से बचना होगा। क्योंकि अब कोई कृष्णा इनकी लाज बचाने लिए नहीं आएगा। अब तो अपने ही राक्षसी प्रवृत्ति के लोग उनका शोषण या भक्षण करने लगे हैं इन्हें खुद को बचाने के लिए अपने आत्म संयम, चरित्र नैतिकता को बचाने के लिए खुद महिलाओं को संगठित होकर रणचंडी बनकर आत्मरक्षा करनी होगी तभी ही सुरक्षित महिला स्वतंत्र होकर विचरण कर सकेगी।

मातृ शक्ति सदैव पूजित - मंकेश्वर नाथ पांडे

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस का दिन महिलाओं की उपलब्धियों ओर समाज में उनके योगदान को सम्मान करनें का दिन है

प्रत्येक महिला की सफलता दूसरे महिला और पूरे समाज के लिए प्रेरणादाई है।उक्त विचार अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस के पूर्व संध्या पर महात्मा गांधी इंटर कालेज के कांन्फ्रेस हाल में सामाजिक एवं साहित्यिक संस्था आधारशिला द्वारा आयोजित स्वङ्ग उमा रानी बनर्जी स्मृति मातृ शक्ति सम्मान 2026 कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि राज्य महिला आयोग उत्तर प्रदेश की उपाध्यक्ष श्रीमती चारु चौधरी ने व्यक्त किया।

इसके पहले श्रीमती चौधरी, कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कालेज के प्रबंधक और वरिष्ठ समाजसेवी मंकेश्वर नाथ पाण्डेय, संस्था के संरक्षक डा ए के सिहं संस्थाध्यक्ष डा रुप कुमार बनर्जी आधारशिला के सचिव दीपक चक्रवर्ती ₹निशांत₹ एवम् श्रीमती चैताली बनर्जी ने दीप प्रज्वलित करने के साथ ही स्वङ्गउमा रानी बनर्जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय सुर साधिका ह्रदया त्रिपाठी के स्वागत गीत से हुआ।साथ में रहे तबला वादक जय डे उसके उपरांत डा सरिता सिहं ने स्वरचित काव्य रचना प्रस्तुत किया।

सम्मान समारोह में समाज में विशिष्ट पहचान बनाने एवं महिलाओं के लिए प्रेरणा बनने वाली श्रीमती रीना जायसवाल, श्रीमती अर्जुमन बानो एवं सुश्री प्रिया कुमारी को स्वङ्गउमा रानी स्मृति मातृ शक्ति

सम्मान 2026 के रूप में मुख्य अतिथि चारु चौधरी, कार्यक्रम अध्यक्ष मनकेश्वर पांडे तथा आधारशिला के अध्यक्ष डॉ रूप ने पटका ओढ़ाकर उन्हें सम्मान पत्र के साथ चित्र शिल्पी विष्णु देव शर्मा के द्वारा बनाया चित्र प्रदान किया।

इस मौके पर संस्था के संरक्षक प्रोफेसर डा ए के सिंह ने कहा महिलाओं के जागरूक और शिक्षित होने से समाज और राष्ट्र का विकास होता है।

संस्थाध्यक्ष सुप्रसिद्ध चिकित्सक एवं समाजसेवी डा रुप कुमार बनर्जी ने कहा कि बड़ा सोचो, बड़ा करो, सफलता अच्छे विचार से शुरू होता है।सचिव दीपक चक्रवर्ती 'निशांत' ने कहा कि महिलाओं को जीवन में आगें बढ़ने का सपना देखना और उनके सपनों को प्रोत्साहित करनें का दिन है। समाजसेविका श्रीमती चैताली बनर्जी ने कहा कि जीवन में अच्छे सपने देखने की कोई उम्र नहीं होती बस उसे देखने के लिए हौसला चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महात्मा गांधी इंटर कालेज के प्रबंधक समाजसेवी मंकेश्वर नाथ पाण्डेय ने कहा कि महिलाऐं शक्ति, साहस और अच्छे कार्यों के लिए प्रशंसा के पात्र हैं एवं सचमुच हमारे लिए खुशी की बात है कि नारी शक्ति उन्नत है।कार्यक्रम का सफल संचालक वरिष्ठ कवियत्री सुश्री डाँ चेतना पाण्डेय ने किया। उन्होंने कार्यक्रम के बीच में थोड़े-थोड़े अंतराल पर अपनी सुन्दर संक्षिप्त काव्य प्रस्तुतियो से सभी का मन मोह लिया।

इस अवसर पर डाँ रेखा रानी शर्मा, ज्योतिविंद प्रभात त्रिपाठी, विरेन्द्र कुमार पाल, अरविंद सिहं, डी पी मौर्या, श्रीमती प्रतिमा चक्रवर्ती, श्रीमती सारिका राय, अनिता रानी, रामानन्द वर्मा, सुभाष चन्द्रा, सत्य शरण दास, श्रीमती एलिसा डे, जय डे, कवियत्री डा सरिता सिंह, कवियत्री प्रेम लता रसविन्दु ,चित्र शिल्पी डा विष्णुदेव शर्मा, डा. शोभित श्रीवास्तव, विनय कुमार शर्मा सुबास चन्द्रा, रंजना सिंह, संगीता त्रिपाठी, कु. वैष्णवी, विश्वेश कुमार, आशीष रुंगटा आदि उपस्थित रहें।

यूपीएससी सफलता और बनाई हुई कहानियाँ

कई अभ्यर्थी वास्तव में गाँवों या साधारण परिवारों से आते हैं और अपनी कहानी इसलिए साझा करते हैं ताकि दूसरे युवाओं को प्रेरणा मिल सके। भारत में ऐसे अनेक सफल अधिकारी हैं जिनकी जड़ें छोटे कस्बों और ग्रामीण परिवेश से जुड़ी रही हैं। उनकी सफलता यह संदेश देती है कि सीमित संसाधनों के बावजूद मेहनत और लगन से बड़ी उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं। हालाँकि, सामाजिक माध्यमों के इस दौर में एक अलग प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है। कुछ लोग अपनी छवि गढ़ने के लिए "किसान का बेटा" या "गाँव से आया लड़का या लड़की" जैसी पहचान को अधिक उभारकर प्रस्तुत करते हैं। कई बार इसका उद्देश्य सहानुभूति अर्जित करना, अपनी कहानी को अधिक प्रेरणादायक बनाकर प्रस्तुत करना या समाचार माध्यमों और सामाजिक माध्यमों में अधिक ध्यान आकर्षित करना भी होता है।

— डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत में संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा केवल एक परीक्षा नहीं है, बल्कि यह लाखों युवाओं के सपनों, संघर्षों और आकांक्षाओं का प्रतीक है। हर वर्ष देशभर से लाखों अभ्यर्थी इस परीक्षा में बैठते हैं और उनमें से कुछ सौ लोग ही अंततः प्रशासनिक सेवा में स्थान प्राप्त कर पाते हैं। इसलिए जो लोग इस कठिन परीक्षा में सफल होते हैं, वे स्वाभाविक रूप से समाज में चर्चा और सम्मान का विषय बन जाते हैं। समाचार माध्यम, सामाजिक माध्यम और आम समाज उनके जीवन की कहानी जानने के लिए उत्सुक रहते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एक दिलचस्प और कभी-कभी चिंताजनक प्रवृत्ति भी देखने को मिली है। कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि शहरों की समृद्ध पृष्ठभूमि में पले-बढ़े कुछ सफल अभ्यर्थी अचानक अपनी पहचान को "किसान पुत्र", "गाँव का बेटा" या "ग्रामीण पृष्ठभूमि" के रूप में प्रस्तुत करने लगते हैं। यह प्रवृत्ति केवल व्यक्तिगत पहचान का प्रश्न नहीं है; यह उस व्यापक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को भी उजागर करती है, जिसमें लोकप्रियता और सहानुभूति प्राप्त करने के लिए अपनी कहानी को विशेष तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आखिर ऐसा क्यों होता है? क्या यह केवल प्रेरणा देने का प्रयास है या फिर लोकप्रियता हासिल करने की एक रणनीति? इस प्रश्न का उत्तर सरल नहीं है, क्योंकि इसके पीछे कई सामाजिक, सांस्कृतिक और माध्यम-संबंधी कारण छिपे हुए हैं। भारतीय समाज में संघर्ष की कहानियाँ हमेशा से अत्यधिक सम्मानित रही हैं। जब कोई व्यक्ति कठिन परिस्थितियों से निकलकर बड़ी सफलता हासिल करता है, तो वह कहानी लाखों लोगों को प्रेरित करती है। यही कारण है कि समाचार माध्यम अक्सर ऐसे उदाहरणों को प्रमुखता से प्रस्तुत करते हैं, जहाँ कोई अभ्यर्थी सीमित संसाधनों, आर्थिक कठिनाइयों या ग्रामीण पृष्ठभूमि के बावजूद सफलता प्राप्त करता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसी कहानियाँ समाज के लिए सकारात्मक भूमिका निभाती हैं। वे युवाओं को यह विश्वास दिलाती हैं कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, मेहनत और दृढ़ संकल्प से सफलता हासिल की जा सकती है। भारत जैसे देश में, जहाँ आज भी ग्रामीण और शहरी अवसरों के बीच बड़ा अंतर मौजूद है,

ऐसी कहानियाँ उम्मीद और प्रेरणा का स्रोत बनती हैं। लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है जब वास्तविकता से अधिक आकर्षक या भावनात्मक कहानी प्रस्तुत करने का दबाव बढ़ जाता है। सामाजिक माध्यमों के इस दौर में हर व्यक्ति अपनी कहानी को इस तरह प्रस्तुत करना चाहता है कि वह अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे और उन्हें प्रभावित करे। इस प्रक्रिया में कभी-कभी वास्तविक पृष्ठभूमि की जटिलता को सरल और भावनात्मक कथा में बदल दिया जाता है।

आज के समय में समाचार माध्यम और सामाजिक माध्यम किसी भी व्यक्ति की छवि बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक सफल अभ्यर्थी की कहानी कुछ ही घंटों में पूरे देश में फैल सकती है। विभिन्न साक्षात्कार, वीडियो मंच और समाचार लेख अक्सर उस कहानी के ऐसे पहलुओं को सामने लाते हैं जो भावनात्मक और प्रेरणादायक हों।

माध्यमों की दृष्टि से यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि दर्शक और पाठक ऐसी कहानियों से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं। "गाँव से निकलकर प्रशासनिक सेवा में पहुँचा युवक" या "किसान की बेटी जिसने प्रशासनिक सेवा में स्थान बनाया" जैसी सुर्खियाँ तुरंत ध्यान आकर्षित करती हैं। परिणामस्वरूप, कभी-कभी कहानी के कुछ हिस्सों को अधिक महत्व दिया जाता है, जबकि अन्य पहलू पीछे छूट जाते हैं। यदि किसी अभ्यर्थी का परिवार मूल रूप से ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ा रहा हो, लेकिन उसकी शिक्षा और परवरिश शहरों में हुई हो, तो माध्यम अक्सर उसी ग्रामीण संबंध को प्रमुखता से प्रस्तुत करते हैं। इससे वास्तविकता का एक आंशिक चित्र सामने आता है।

भारत जैसे विशाल और विविध समाज में पहचान हमेशा सरल और एक-आयामी नहीं होती। किसी व्यक्ति का जन्म गाँव में हो सकता है, लेकिन शिक्षा शहर में हुई हो सकती है। किसी के माता-पिता खेती से जुड़े हो सकते हैं, जबकि परिवार की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत मजबूत हो सकती है।

वास्तव में दोनों बातें एक साथ सही हो सकती हैं। लेकिन जब कहानी को सरल और प्रभावी बनाने की कोशिश की जाती है, तो अक्सर एक ही पहचान को प्रमुखता दी जाती है। यही कारण है कि कभी-कभी लोगों को यह लगता है कि वास्तविकता से अलग या बढ़ा-चढ़ाकर चित्र प्रस्तुत किया जा रहा है। आज का समय छवि और कथानक का समय है। सामाजिक माध्यमों ने हर व्यक्ति को अपनी छवि गढ़ने का अवसर दिया है। लोग केवल यह नहीं बताते कि वे कौन हैं, बल्कि यह भी तय करते हैं कि वे समाज के सामने कैसे दिखाई देना चाहते हैं। लेकिन जब यह प्रक्रिया वास्तविकता से अधिक छवि-निर्माण पर आधारित होने लगती है, तो यह आलोचना का विषय बन जाती है। समाज को यह महसूस होने लगता है कि लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए पहचान का उपयोग किया जा रहा है।

यह भी याद रखना आवश्यक है कि हर सफल अभ्यर्थी ऐसा नहीं करता। देश में हजारों ऐसे अधिकारी हैं जो अपनी पृष्ठभूमि के बारे में ईमानदारी से बात करते हैं और अपनी सफलता को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में देखते हैं। अंततः प्रशासनिक सेवा में सफलता का वास्तविक मूल्य इस बात से तय होना चाहिए कि कोई अधिकारी अपने पद का उपयोग समाज के हित में किस प्रकार करता है। ईमानदारी, संवेदनशीलता और जनसेवा की भावना ही किसी भी अधिकारी की सबसे बड़ी पहचान होती है। लोकप्रियता क्षणिक हो सकती है, लेकिन सच्ची सेवा और ईमानदार कार्य ही वह आधार है जो किसी व्यक्ति को स्थायी सम्मान दिलाता है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

राजेश्वरी चटर्जी भारत की एक अग्रणी महिला वैज्ञानिक

● विजय गर्ग

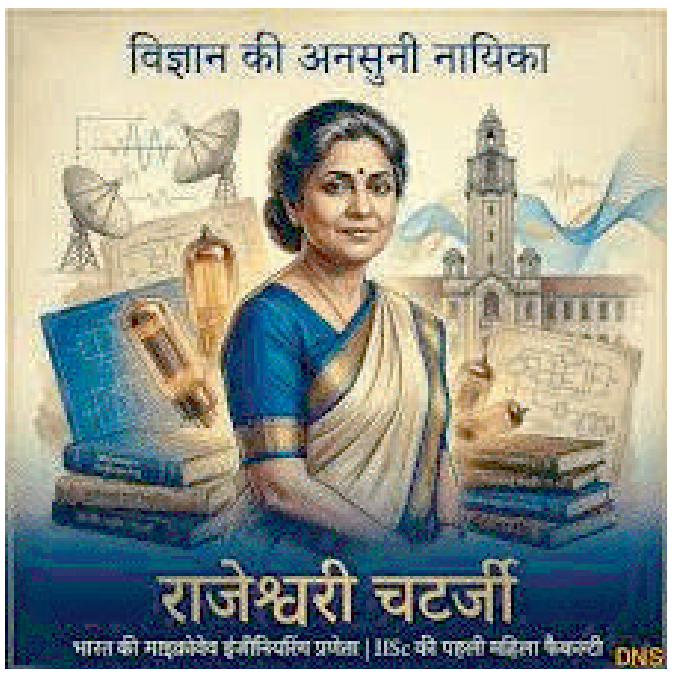

राजेश्वरी चटर्जी भारत की अग्रणी महिला वैज्ञानिकों और इंजीनियरों में से एक थीं। उन्होंने माइक्रोवेव इंजीनियरिंग और एंटीना प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय योगदान दिया तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग में भारत की प्रारंभिक शोध क्षमता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जीवन दृढ़ संकल्प, वैज्ञानिक जिज्ञासा और शिक्षा के प्रति समर्पण का एक प्रेरणादायक उदाहरण है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

राजेश्वरी चटर्जी का जन्म 24 जनवरी, 1922 को भारत के कर्नाटक में हुआ था। वह एक प्रगतिशील परिवार में पली-बढ़ी जो शिक्षा को महत्व देता था। उनकी दादी, कमलम्मा दासप्पा, मैसूर में पहली महिला स्नातकों में शामिल थीं और उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए सक्रिय रूप से काम किया। इस वातावरण ने राजेश्वरी को विज्ञान में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने बैंगलोर के सेंट्रल कॉलेज में गणित और भौतिकी की पढ़ाई की। बाद में उन्हें मिशिगन विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति मिली, जहां उन्होंने स्नातकोत्तर और पीएच.डी. की डिग्री पूरी की। डी। 1953 में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में।

वैज्ञानिक कैरियर

अपनी पीएचडी पूरी करने के बाद। डी. राजेश्वरी चटर्जी भारत लौट आए और इलेक्ट्रिकल कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग में संकाय सदस्य के रूप में भारतीय विज्ञान संस्थान में शामिल हुए। बाद में वह प्रोफेसर और विभाग की अध्यक्ष बनीं, जो उस समय एक महिला वैज्ञानिक के लिए एक दुर्लभ उपलब्धि थी। अपने पति सिसिर कुमार चटर्जी के साथ मिलकर, उन्होंने भारत की पहली माइक्रोवेव इंजीनियरिंग अनुसंधान प्रयोगशालाओं में से एक स्थापित किया। उनके कार्य ने भारत में माइक्रोवेव और एंटीना इंजीनियरिंग पर शोध की नींव रखी।

माइक्रोवेव प्रौद्योगिकी में उनके शोध ने बाद में रडार प्रणालियों, विमानों और अंतरिक्ष अनुप्रयोगों में उपयोग किए जाने वाले विकास में योगदान दिया। अपने करियर के दौरान उन्होंनेः

निर्देशित 20 पीएच. डी। छात्र

100 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किये गये

माइक्रोवेव इंजीनियरिंग और एंटीना पर सात पुस्तकें लिखीं।

पुरस्कार और मान्यता

राजेश्वरी चटर्जी को इंजीनियरिंग और अनुसंधान में उनके योगदान के लिए कई पुरस्कार मिले, जिनमें शामिल हैं

सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र के लिए माउंटबैटन पुरस्कार

जे। सी। बोस मेमोरियल प्राइज

अनुसंधान और शिक्षण में उत्कृष्टता के लिए रामलाल वाडवा पुरस्कार।

2017 में, उन्हें भारत सरकार द्वारा इंजीनियरिंग में उनके अग्रणी कार्य के लिए भारत की पहली महिला उपलब्धियों में से एक के रूप में मान्यता दी गई थी।

विरासत और प्रेरणा

राजेश्वरी चटर्जी 1982 में भारतीय विज्ञान संस्थान से सेवानिवृत्त हुए, लेकिन उन्होंने सामाजिक मुद्दों पर काम करना जारी रखा और महिलाओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। 3 सितम्बर, 2010 को उनका निधन हो गया और उन्होंने अपने पीछे एक समृद्ध वैज्ञानिक विरासत छोड़ी।

उनकी उपलब्धियों ने इंजीनियरिंग में लैंगिक बाधाओं को तोड़ दिया और STEM क्षेत्रों में कई महिलाओं के लिए दरवाजे खोल दिए। आज, उन्हें एक अग्रणी व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने यह साबित कर दिया कि महिलाएं भी पुरुषों की तरह ही विज्ञान और इंजीनियरिंग में उत्कृष्टता हासिल कर सकती हैं।

निष्कर्ष

राजेश्वरी चटर्जी का जीवन दर्शाता है कि कैसे दृढ़ संकल्प, शिक्षा और समर्पण न केवल एक व्यक्तिगत कैरियर को बल्कि अनुसंधान के पूरे क्षेत्र को भी बदल सकते हैं। माइक्रोवेव इंजीनियरिंग में उनका योगदान और भविष्य के वैज्ञानिकों को मार्गदर्शन देने में उनकी भूमिका, भारत और दुनिया भर में छात्रों और शोधकर्ताओं की पीढ़ियों को प्रेरित करती है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

डॉ मंगला नरलीकर भारत की एक प्रतिष्ठित महिला गणितज्ञ

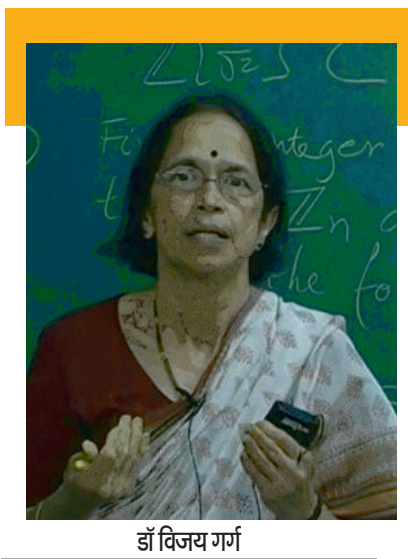

डॉ विजय गर्ग

डॉ मंगला नरलीकर भारत की सबसे सम्मानित महिला गणितज्ञों में से एक हैं, जिन्होंने गणित शिक्षा और लोकप्रिय विज्ञान लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपने शोध, शिक्षण और पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने गणित को छात्रों और आम जनता के लिए अधिक समझने योग्य और रोचक बनाने में मदद की है। उनकी जीवन कहानी ज्ञान, शिक्षा और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के प्रति समर्पण को दर्शाती है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

मंगला नरलीकर का जन्म 1940 में भारत के महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुआ था। वह एक शैक्षणिक परिवार में पली-बढ़ी, जहां शिक्षा को बहुत महत्व दिया जाता था। छोटी उम्र से ही उन्होंने गणित और समस्या-समाधान में गहरी रुचि दिखाई।

उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय में गणित में उच्च शिक्षा प्राप्त की, जहां उन्होंने गणित में उत्कृष्टता के साथ स्नातकोत्तर की डिग्री पूरी की। उनके मजबूत शैक्षणिक प्रदर्शन ने शिक्षण और अनुसंधान में उनके भविष्य के करियर की नींव रखी।

शैक्षणिक कैरियर

डॉ। मंगला नरलीकर पुणे विश्वविद्यालय (अब सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय) में गणित के प्रोफेसर के रूप में काम करते थे। अपने शैक्षणिक कैरियर के दौरान, उन्होंने अनेक छात्रों को पढ़ाया तथा विश्लेषणात्मक संख्या सिद्धांत और संबंधित गणितीय क्षेत्रों में अनुसंधान में योगदान दिया।

पढ़ाने के अलावा, उन्होंने छात्रों और आम जनता के बीच गणित को लोकप्रिय बनाने में सक्रिय रूप से काम किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि गणित को एक कठिन या भयावह विषय के रूप में नहीं, बल्कि एक तार्किक और आकर्षक अनुशासन के रूप में देखा जाना चाहिए।

विज्ञान संचार में योगदान

मंगला नरलीकर ने कई लोकप्रिय विज्ञान और गणित पुस्तकें लिखी हैं, विशेष रूप से मराठी में, ताकि छात्रों को गणित में रुचि और आत्मविश्वास विकसित करने में मदद मिल सके। उनके लेखन में जटिल विचारों को सरल भाषा में समझाया गया है, ताकि युवा शिक्षार्थी उन्हें आसानी से समझ सकें।

उन्होंने स्कूल और कॉलेज के छात्रों के बीच गणितीय सोच को बढ़ावा देने के लिए कई व्याख्यान और शैक्षिक कार्यक्रम भी दिए हैं। उनके प्रयासों ने कई युवा लोगों, विशेषकर लड़कियों को गणित और विज्ञान में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है।

व्यक्तिगत जीवन और बौद्धिक वातावरण

डॉ। मंगला नरलीकर की शादी प्रसिद्ध भारतीय खगोल भौतिक विज्ञानी जयंत नारलीकर से हुई है, जो ब्रह्माण्ड विज्ञान में अपने काम के लिए जाने जाते हैं। विज्ञान और शिक्षा के प्रति उनकी साझा प्रतिबद्धता ने एक मजबूत बौद्धिक वातावरण का निर्माण किया है जो अनुसंधान और विज्ञान की सार्वजनिक समझ के लिए समर्पित है।

पुरस्कार और मान्यता

गणित शिक्षा और विज्ञान संचार में उनके योगदान के लिए, मंगला नरलिकर को शैक्षणिक और साहित्यिक संगठनों से कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनकी पुस्तकों और व्याख्यानों ने समाज में वैज्ञानिक स्वभाव और गणितीय जागरूकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा

डॉ। मंगला नरलीकरकोल का जीवन दर्शाता है कि कैसे गणित एक शोध क्षेत्र और युवा शिक्षार्थियों को प्रेरित करने का साधन दोनों हो सकता है। उन्होंने दिखाया है कि भारत में गणितीय ज्ञान और शिक्षा को आगे बढ़ाने में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

निष्कर्ष

मंगला नरलीकर की यात्रा शिक्षा के प्रति समर्पण, जिज्ञासा और समाज के साथ ज्ञान साझा करने की इच्छा को उजागर करती है। उनका योगदान छात्रों, शिक्षकों और विशेष रूप से युवा लड़कियों को गणित की सुंदरता और शक्ति का पता लगाने के लिए प्रेरित करता है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात गणितज्ञ स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

पश्चिम बंगाल का 2026 का बजट : ममता के उदार दोस्त क्या मानने से इंकार कर रहे हैं?

(आलेख : अर्का राजपंडित, अनुवाद : संजय पराते)

पश्चिम बंगाल के 2026–27 के बजट को, 'बंगाल का गौरव' नाम दिया गया है। यह बजट 4.06 लाख करोड़ रुपये का है। इस बजट का रोडमैप, एक ऐसी सरकार के पंद्रह साल पूरे होने का प्रतीक है, जिसकी सावधानीपूर्वक यह छवि बनाई गई है कि यह सरकार गरीबपरस्त है और प्रगतिशील सोच रखती है। इस बात को ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस सरकार को समर्थन करने वाले एक उदार नेटवर्क ने आगे बढ़ाया है, जो राज्य के नकद हस्तांतरण मॉडल को नव-उदारवाद के खिलाफ एक बड़ा मूलगामी विरोध बताता है।

फिर भी, यह दिखावा टूट रहा है। निम्न वर्ग की जीत दिखाने के बजाय, ये कल्याणकारी कार्यक्रम सिर्फ़ ज़िंदा रहने के लिए राहत देते हैं, और एक आत्मनिर्भर उत्पादक अर्थव्यवस्था बनाने में गहरी नाकामी को छिपाते हैं। इस प्रगतिशील ब्रांडिंग का असल में मज़दूर वर्ग और किसानों की कठिनाईयों से कोई लेना-देना नहीं है।

पश्चिम बंगाल के लिए 2026-27 के राजकोषीय रोडमैप से पता चलता है कि अर्थव्यवस्था संरचनात्मक निर्भरता और राजकोषीय भंगुरता के चक्र में फंसी हुई है। 21.48 लाख करोड़ रूपये के जीएसडीपी के मुकाबले 2,87,792 करोड़ रूपये की कुल राजस्व प्राप्ति के अनुमान के साथ, राज्य की वित्तीय आमद स्थानीय करारोपण और केंद्रीय करों में हिस्सेदारी पर लगभग उतनी ही निर्भरता के बीच झूल रही है। यह अनुरूपता एक ठहरे हुए अंदरूनी राजस्व आधार को दिखाती है, जो स्वतंत्र रूप से अपनी परिसंपत्ति का निर्माण करने में राज्य की नाकामी को रेखांकित करता है। जबकि सरकार राजस्व घाटे में 21,759 करोड़ रूपये की नाटकीय कमी का दावा करती है, ऐसे अनुमान अक्सर कर्ज़ से संचालित राज्य होने की कड़वी सच्चाई को छिपाते हैं। बाजार से 80,445 करोड़ रूपये के चौंका देने वाले उधार का अनुमान लगाकर, प्रशासन मौजूदा कमजोरियों की भरपाई के लिए राज्य के भविष्य को गिरवी रख रहा है।

राज्य सामाजिक कल्याण के कार्यों पर 1.80 लाख करोड़ रुपये (बजट का लगभग 45%) खर्च कर रहा है, जिसमें लक्ष्मीर भंडार को 15,000 करोड़ रुपये तक बढ़ाना भी शामिल है, ताकि निजी श्रम बाजार की नाकामी की भरपाई के लिए सामाजिक मजदूरी दी जा सकें। नव-उदारवादी दौर में, ये सुरक्षा ज़िंदा रहने के लिए ज़रूरी हैं, लेकिन जब इसे उत्पादन की ताकतों (उद्योग और प्रौद्योगिकी) के विकास के साथ नहीं जोड़ा जाता ; तो ये गरीबी को खत्म करने के बजाय उसे प्रबंधित करने का एक तरीका बन जाती हैं। उद्योग और एमएसएमई के लिए बहुत कम आबंटन (बजट का 1% से भी कम) यह सुनिश्चित करता है कि मज़दूर वर्ग श्रम की एक आरक्षित सेना बनी रहे, जिन्हें उत्पादक रोज़गार के बजाय पलायन करने या राज्य से मिलने वाले पैसे पर गुज़ारा करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

पूंजीगत व्यय के लिए 86,533 करोड़ रूपये आबंटित किए गए हैं, जो एक मज़बूत अधोसंरचना के निर्माण की योजना बनाने के लिए नाकाफी है। यह एक चूका हुआ विचार लगता है, जो बंगाल के उद्योगों और खेती-बाड़ी को बढ़ावा देने के लिए नाकाफी है, जो कि बंगाल को एक नियमित गुज़ारे लायक अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए ज़रूरी है।

वह असलियत, जिसे ममता के उदार दोस्त छिपा नहीं सकते

पश्चिम बंगाल बहुत ज़्यादा आर्थिक उतार-चढ़ाव से ग्रस्त है। यह एक ऐसी कड़वी सच्चाई है, जिसे बताने में ममता बनर्जी के उदार दोस्त अक्सर नाकाम रहे हैं। 2025-26 में, राज्य की प्रति व्यक्ति आय लगभग 1,71,184 रूपये थी, जो 2.12 लाख रूपये के राष्ट्रीय औसत से लगभग 20% कम है। यह अंतर प्रति व्यक्ति जीडीपी के मामले में पश्चिम बंगाल को भारत में 21वें स्थान पर रखता है, जिससे यह दक्षिणी और पश्चिमी भारत के औद्योगिक महाशक्तियों से काफी पीछे रह जाता है।

घर-परिवारों के वित्तीय स्वास्थ्य की हालत भी उतनी ही चिंता की बात है, क्योंकि आरबीआई के हाल ही के आंकड़ों से पता चलता है कि 2019 और 2025 के बीच इस राज्य में सालाना वित्तीय देनदारी में 102% की बढ़ोतरी हुई है। इसके उलट, वित्तीय संपत्ति में सिर्फ़ 48% की बढ़ोतरी हुई है, जिसका मतलब है कि हर 1 रूपये की बचत पर, कर्ज़ लगभग 2 रूपये बढ़ रहा है। यह असंतुलन इस बात से और साफ़ होता है कि पश्चिम बंगाल पर, अब देश में सबसे ज़्यादा सूक्ष्म वित्त (एमएफआई) कर्ज बकाया है। कई ग्रामीण परिवारों के लिए, बचत अब संपत्ति निर्माण के लिए नहीं है, बल्कि हर हफ़्ते या महीने में एमएफआई का पुनर्भुगतान करने के लिए होती है।

स्वास्थ्य देखभाल और कर्ज तक पहुंच में संकट की वजह से कर्ज़ का यह चक्कर और बढ़ गया है। 2025-26 की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि पश्चिम बंगाल में वित्तीय तनाव के सबसे ज़्यादा मामले हैं, जिससे परिवारों को हॉस्पिटल में भर्ती होने के खर्च के लिए अपनी संपत्ति बेचनी पड़ती है या भारी कर्ज़ लेना पड़ता है। नतीजतन, सोने को गिरवी रखकर कर्ज लेना (गोल्ड लोन) आखिरी उपाय से बदलकर घरेलू कर्ज़ का मुख्य चालक बन गया है ; 2025 के आखिर तक, ये ऋण साल-दर-साल 125% तक बढ़ गए हैं। यह बढ़ोतरी ज़्यादातर सोने की रिकॉर्ड ऊँची कीमतों के कारण और साथ ही सुरक्षित ऋण विकल्पों में कमी की वजह से हुई है, जिससे घरों के पास बहुत कम विकल्प बचे हैं।

राज्य की औद्योगिक बुनियाद भी बहुत कमज़ोर है, यह बात ममता बनर्जी के उदार दोस्त अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था में

विनिर्माण का योगदान सिर्फ़ 18.8% ही है, जो राष्ट्रीय औद्योगिक औसत से कम है। जोर-शोर से प्रचारित 'वैश्विक व्यापार मेलों (ग्लोबल बिज़नेस समिट्स)' के बावजूद, 2019 और 2025 के बीच वास्तव में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) का प्रवाह सिर्फ़ 15,256 करोड़ रूपये था, जो महाराष्ट्र या कर्नाटक जैसे राज्यों द्वारा किए गए निवेश का एक छोटा सा हिस्सा है। इसके अलावा, 2025 के उत्तरार्द्ध में पूंजीगत व्यय में 35.1% की कमी आ गई है, जो यह दिखाता है कि राज्य दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण के लिए ज़रूरी कारखानों, पुलों और बंदरगाहों पर कम खर्च कर रहा है।

उच्च मजदूरी वाले औद्योगिक रोजगार के अभाव ने पश्चिम बंगाल को वास्तव में श्रम निर्यात करने वाली अर्थव्यवस्था में बदल दिया है। जबकि आधिकारिक बेरोज़गारी दर 3.6% बताई गई है, बेरोज़गारी भत्ता के लिए बांग्लार युवा साथी की मांग कुछ और ही कहानी कहती है : लगभग 27.8 लाख युवा, जिनमें से कई के पास डिग्री है, उन्हें मूल भत्ता से ज़्यादा वेतन वाला रोजगार नहीं मिल रहा है। इन भत्तों के लिए राज्य के 2026-27 के बजट में 5,000 करोड़ रूपये के आबंटन को निजी क्षेत्र में खपत की गहरी अधोसंरचनात्मक कमी के लिए मरहम-पट्टी के तौर पर देखा जाना चाहिए। ग्रामीण इलाकों में बताई जा रही 3.1% की बेरोज़गारी दर भी गुमराह करने वाली है, क्योंकि 63.2% आबादी छोटे, अलाभकारी खेती के टुकड़ों में अपना काम करती है, जो छिपी हुई बेरोज़गारी का एक शास्त्रीय मामला है।

पलायन का स्तर राज्य के कार्यबल के अंदर की निराशा को दिखाता है। 2025 के अंत के सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, लगभग 22.40 लाख मजदूर दूसरे राज्यों में काम कर रहे हैं, जबकि श्रमश्री योजना की रिपोर्ट के अनुसार, 31.77 लाख प्रवासी मजदूरों ने लौटकर, स्थानीय मदद पाने के लिए अपना पंजीयन कराया है। 2025 के एक अध्ययन में पाया गया है कि इनमें से 62.9% लोग सिर्फ़ बेहतर रोजगार के मौकों के लिए पलायन करते हैं, और 25% प्रवासी परिवार भेजे गए पैसे का इस्तेमाल सिर्फ़ खाने के लिए करते हैं। आजीविका के लिए यह पलायन इस बात को पुष्ट करता है कि आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए, राज्य छोड़ना ही आधारभूत पोषण की ज़रूरतों को पूरा करने का एकमात्र तरीका है -- यह बार-बार दुहराई जाने वाली एक आर्थिक नाकामी है, जिसे मौजूदा सरकार का समर्थन करने वाले लोग अनदेखा कर रहे हैं।

बजट में क्या नजरअंदाज किया गया है ?

उद्योग और खनिज के लिए 2,842.96 करोड़ रूपये का आबंटन कुल खर्च का सिर्फ़ 0.70% है। यह बहुत कम निवेश खास तौर पर चिंता की बात है, क्योंकि राज्य अभी ज़्यादा उत्पादकता वाले विनिर्माण रोजगार की कमी से जूझ रहा है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण के मामले में यह अनदेखी और भी साफ़ है, जिसे सिर्फ़ 155.94 करोड़ दिए गए हैं, जो कुल बजट का लगभग 0.03% है। यह बहुत कम वित्त-पोषण आधुनिक प्रौद्योगिकी में मुकाबला करने की राज्य की काबिलियत को असरदार तरीके से कम कर देती है। जहाँ वैश्विक प्रतियोगी एआई, जैव-प्रौद्योगिकी और हरित ऊर्जा में भारी निवेश कर रहे हैं, वहीं पश्चिम बंगाल का आबंटन, जिसमें से सिर्फ़ लगभग 82 करोड़ रूपये ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए है, यह सुनिश्चित करता है कि राज्य के सबसे तेज़ दिमाग कर्नाटक, तमिलनाडु या महाराष्ट्र जैसे ज़्यादा प्रौद्योगिकी वाले आगे बढ़े हुए राज्यों में लगातार प्रतिभा पलायन (ब्रेन ड्रेन) करते रहें। शोध और विकास कार्यों में निवेश की यह कमी इसी बात को पक्का करती है कि बंगाल एक प्रौद्योगिकी निर्माण राज्य होने के बजाय सिर्फ़ उपभोक्ता राज्य बना रहे, जिससे उत्पादक रोज़गार के सृजन में अंतर और बढ़ जाता है।

सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण के लिए सिर्फ 5,858.95 करोड़ रूपये के आबंटन से यह अनदेखी और भी साफ़ हो जाती है, जो बजट का सिर्फ़ 1.48% है। यह देखते हुए कि पश्चिम बंगाल भारत के सबसे ज़्यादा बाढ़ वाले इलाकों में से एक है, जो उत्तर में नदी किनारे के कटाव और दक्षिण में ज्वार-भाटे से जूझता है, यह कम आबंटन बड़े अधोसंरचनात्मक परियोजनाओं और 1,500 करोड़ रुपए के घाटल मास्टर प्लान जैसे बार-बार आने वाले चुनावी मुद्दों या पूरे राज्य भर की पुरानी नहर प्रणाली को आधुनिक बनाने के लिए काफ़ी नहीं है। इसी तरह, ऊर्जा क्षेत्र को सिर्फ़ 5,372.50 करोड़ मिले हैं, जो कुल खर्च का 1.36% है। इस कम निवेश से राज्य के बहु-प्रचारित औद्योगिक लक्ष्यों में गतिरोध का खतरा है।

शिक्षा के क्षेत्र में, उच्च शिक्षा के लिए 6,858.69 करोड़ रुपये का आबंटन है, फिर भी यह आंकड़ा मानवीय पूंजी में गहरे संकट को छुपाता है। जबकि राज्य तरुणेर स्वप्नो जैसी छात्रों को प्रत्यक्ष फंड योजना (डायरेक्ट-टू-स्टूडेंट स्कीम) का आबंटन जारी रखे हुए है, जिसके लिए टैबलेट और स्मार्टफोन के लिए 900 करोड़ रुपये दिए गए थे, शिक्षण की मुख्य अधोसंरचना चरमरा रही है। राज्य में अभी भी सेकेंडरी स्कूलों में शिक्षकों के 35,726 और प्राथमिक शिक्षकों के 13,421 पद रिक्त हैं। यह रिक्तता काफी हद तक 2016 के एसएलएसटी भर्ती घोटाले का नतीजा है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने व्यवस्था में गड़बड़ियों के कारण 2025 में लगभग 26,000 नियुक्तियां रद्द कर दी थी।

22,338.08 करोड़ रुपये का स्वास्थ्य बजट दिखाता है कि बीमा की वजह से सार्वजनिक कल्याण का निजीकरण हो रहा है। स्वास्थ्य साथी मॉडल, जिसमें 2.45 करोड़ परिवार शामिल हैं, निजी चिकित्सा पूंजी के साथ दावा निर्धारण करने के लिए सार्वजनिक वित्त का अच्छे से इस्तेमाल करता है। यह सार्वभौमिक कवरेज का दिखावा करता है, जबकि वित्तीय तनाव का मामला ज़्यादा बना रहता है, जिससे गरीबों को बुनियादी निदान के लिए अपनी संपत्तियां बेचनी पड़ती हैं। ग्रामीण इलाकों में डॉक्टर-मरीज अनुपात राष्ट्रीय औसत 1:811 से काफी नीचे होने के बावजूद, राज्य के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को मज़बूत बनाने के बजाय बजट में निजी अस्पतालों की लाभ-सीमा को प्राथमिकता दी गई है, जिससे आम लोगों के जीने का सवाल बाजार के भरोसे हो गया है।

इस बजट में 'गर्व' करने लायक कुछ नहीं है, बल्कि यह स्थाई निर्भरता की ऐसी योजना है, जो लोगों को गरीबी में फंसाए रखता है। असली तरक्की तभी होती है, जब सरकार बिगड़ी हुई व्यवस्था को ठीक करे, एक उत्पादक अर्थव्यवस्था का निर्माण करें, जहाँ मज़दूरों को घर पर ही अहमियत दी जाए, न कि उन्हें आजीविका के लिए दूसरे राज्यों में पलायन करने के लिए मजबूर किया जाए। ममता के उदार समर्थक इस दर्दनाक सच्चाई को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं, लेकिन लाखों प्रवासी मज़दूरों और कर्ज़ में डूबकर संघर्ष कर रहे परिवारों के पास ऐसा करने का कोई कारण नहीं है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

अस्तित्व (कहानी)

राधिका एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार में पली-बढ़ी लड़की थी, लेकिन उसके सपने साधारण नहीं थे। उसके पिता सेना में कैप्टन थे- अनुशासनप्रिय, कर्तव्यनिष्ठ और कम बोलने वाले। घर में एक भाई और दो बड़ी बहनें थीं। गांव का छोटा सा घर, मिट्टी की खुशबू और सीमित साधनों के बीच राधिका का बचपन बीता।गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ते हुए ही राधिका को किताबों से प्यार हो गया था। अक्सर वह अपनी कॉपी के आख़िरी पन्नों पर कुछ न कुछ लिखती रहती-कभी कविता, कभी कहानी। उसकी अध्यापिका कहती थीं, 'राधिका, तुम आगे चलकर बहुत अच्छा लिखोगी।' यह सुनकर उसके मन में एक छोटी-सी लौ जल उठती-कुछ बनने की, कुछ करने की।आगे की पढ़ाई के लिए उसे शहर के कॉलेज में भेजा गया। हॉस्टल का जीवन उसके लिए नया था-नए लोग, नए विचार, नई दुनिया। वहीं उसने पहली बार जाना कि लड़कियां सिर्फ घर संभालने के लिए ही नहीं, बल्कि अपने सपनों के लिए भी जी सकती हैं। वह पढ़ाई में अच्छी थी और कॉलेज की बहसों में भी हिस्सा लेती थी।लेकिन पढ़ाई पूरी होते ही परिवार की प्राथमिकता बदल गई-अब राधिका की शादी करनी थी।करीब बीस साल पहले उसकी शादी एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार में कर दी गई। श्वसुर किसान थे और सास एक शांत स्वभाव की गृहिणी। घर का माहौल बुरा नहीं था, लेकिन यहां राधिका के सपनों के लिए कोई जगह नहीं थी। शादी के बाद उसका संसार रसोई, आंगन और परिवार की जिम्मेदारियों तक सीमित हो गया।उसका पति भी शुरू में बेरोजगार था। आठ साल बाद जाकर उसे पैरामिलिट्री में ऑफिसर की नौकरी मिली। परिवार खुश था कि अब घर की आर्थिक स्थिति सुधर जाएगी। राधिका भी खुश थी, लेकिन उसके भीतर कहीं एक खालीपन था-जैसे उसने अपने किसी हिस्से को धीरे-धीरे खो दिया हो।समय बीतता गया। दो बच्चे हुए-एक बेटा और एक बेटी। बच्चों की पढ़ाई, श्वसुर-सास की देखभाल और घर की जिम्मेदारियों के बीच राधिका का दिन कब शुरू होता और कब खत्म, उसे खुद पता नहीं चलता।लेकिन कभी-कभी रात को जब सब सो जाते, तब वह अपनी पुरानी डायरी निकालती। उसमें कुछ अधूरी कविताएं, कुछ पुराने सपने और कुछ दबे हुए सवाल लिखे होते।एक दिन उसकी बेटी ने उससे पूछा, 'मां, आप क्या बनना चाहती थीं?'यह सवाल सुनकर राधिका कुछ पल चुप रही। फिर धीमे से बोली, 'मैं लिखना चाहती थीङ्क शायद एक लेखिका बनना।'बेटी ने सहजता से कहा, 'तो अब क्यों नहीं लिखती?'राधिका के लिए यह सवाल जैसे आईना था। क्या सचमुच अब भी देर हो चुकी थी? या वह खुद ही मान बैठी थी कि उसका समय निकल गया है? उस रात उसने बहुत देर तक सोचा। उसे एहसास हुआ कि उसने हमेशा दूसरों के लिए जीया-पिता की उम्मीदों के लिए, पति के संघर्ष के लिए, बच्चों के भविष्य के लिए। लेकिन खुद के लिए उसने क्या किया?

अगले दिन उसने अपनी पुरानी डायरी फिर से खोली और एक नई कहानी लिखनी शुरू की-एक ऐसी स्त्री की कहानी, जो अपने सपनों को उम्र की कैद में नहीं रखती।

धीरे-धीरे उसकी कहानियां स्थानीय पत्रिकाओं में छपने लगीं। शुरुआत छोटी थी, लेकिन उसके लिए वह बहुत बड़ी थी। अब जब वह लिखती, तो उसे लगता जैसे वह खुद को फिर से पा रही है।राधिका ने तब समझा कि स्त्री का जीवन सिर्फ त्याग और जिम्मेदारियों की कहानी नहीं होना चाहिए। उसके अपने सपने, अपनी पहचान और अपनी आवाज भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं।आज भी वह वही साधारण गृहिणी है-सुबह रसोई में काम करती है, बच्चों की चिंता करती है, परिवार की देखभाल करती है। लेकिन अब एक फर्क है।अब वह सिर्फ किसी की पत्नी, बहू या मां नहीं है।अब वह राधिका भी है- अपने सपनों के साथ, अपनी पहचान के साथ।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, संगरिया, हनुमानगढ़, राजस्थान।

आधी आबादी की ऊर्जा, जो पूरे भविष्य को दिशा देती है

• **प्रो. आरके जैन "अरिजीत"**

कभी-कभी इतिहास के सबसे गहरे प्रश्न एक साधारण-से वाक्य में सिमट जाते हैं। "देना है, तो पाना है" ऐसा ही वाक्य है—सुनने में सरल, पर समाज के भविष्य की गहन सच्चाई को उजागर करने वाला। हम प्रायः भूल जाते हैं कि सभ्यता केवल इमारतों, मशीनों और नीतियों से नहीं बनती, बल्कि उन हाथों से आकार लेती है जो जीवन को जन्म देते हैं, उसे सँभालते हैं और उसे दिशा देते हैं। ये हाथ नारी के हैं। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस हमें याद दिलाता है कि दुनिया की सबसे बड़ी विडंबना यह रही है कि जिसने मानवता को जन्म दिया, उसे ही समानता पाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। वर्ष 2026 की थीम "देना है, तो पाना है" इसी विडंबना को चुनौती देती है और स्पष्ट करती है कि यदि समाज सच में प्रगति चाहता है, तो उसे नारी को अवसर देना ही होगा, क्योंकि यही वह बीज है जिससे विकास का वृक्ष फलता-फूलता है।

इतिहास की परतें खोलें तो एक अत्यंत रोचक सत्य उजागर होता है। मानव सभ्यता की पहली शिक्षक, पहली चिकित्सक और पहली प्रबंधक कोई और नहीं, बल्कि महिला ही थी। प्राचीन समाजों में बच्चों को जीवन के मूल संस्कार माँ से मिलते थे, औषधियों का ज्ञान भी प्रायः महिलाओं के पास होता था, और घर-परिवार के संसाधनों का प्रबंधन भी वही करती थीं। यानी सभ्यता की बुनियादी व्यवस्थाएँ उसी के हाथों में थीं। लेकिन समय के साथ सत्ता और संसाधनों पर नियंत्रण की होड़ बढ़ी और महिलाओं को धीरे-धीरे निर्णयों से दूर कर दिया गया। यह केवल सामाजिक अन्याय नहीं, बल्कि मानव विकास की बड़ी चूक भी थी। क्योंकि जब आधी आबादी की प्रतिभा सीमित कर दी जाती है, तो समाज की रचनात्मक ऊर्जा भी आधी रह जाती है। इसलिए आज महिला सशक्तिकरण केवल अधिकारों का नहीं, बल्कि सभ्यता की पूरी क्षमता को विकसित करने का प्रश्न है।

"देना है, तो पाना है" का अर्थ केवल इतना नहीं कि महिलाओं को अवसर दें और बदले में विकास पाएँ। इसका एक और गहरा पहलू है, जो अक्सर चर्चा में नहीं आता। जब किसी समाज में महिलाओं को सम्मान मिलता है, तो वहाँ संवेदनशीलता और संतुलन भी बढ़ता है। शोध बताते हैं कि जहाँ महिलाओं की भागीदारी निर्णयों में अधिक होती है, वहाँ नीतियाँ अधिक मानवीय और दीर्घकालिक होती हैं। उदाहरण के लिए, जब किसी गाँव की पंचायत में महिलाएँ सक्रिय होती हैं, तो वहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है। यानी नारी केवल अपने लिए नहीं सोचती, वह समाज की व्यापक भलाई के बारे में भी सोचती है। इसलिए नारी को अवसर देना केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि सामूहिक समृद्धि की दिशा में उठाया गया कदम है।

जब समाज अपनी संभावनाओं को पहचानता है, तब नारी की शक्ति स्पष्ट रूप में सामने आती है। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं, और उनकी उपलब्धियों के पीछे केवल व्यक्तिगत प्रतिभा नहीं, बल्कि सामाजिक सहयोग भी होता है। जब कोई लड़की वैज्ञानिक बनती है, तो उसके पीछे परिवार का विश्वास होता है। जब कोई महिला उद्यमी बनती है, तो उसके पीछे समाज का समर्थन होता है। यही "देना है, तो पाना है" का अर्थ है। समाज जब महिलाओं को शिक्षा, संसाधन और स्वतंत्रता देता है, तो वे उसे कई गुना लौटाती हैं। एक शिक्षित महिला

केवल अपना जीवन नहीं बदलती, बल्कि पूरे परिवार के स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाती है। इसलिए कई अर्थशास्त्री मानते हैं कि किसी भी देश के विकास के लिए महिलाओं की शिक्षा में निवेश सबसे प्रभावी होता है।

फिर भी यह सच है कि दुनिया अभी पूरी तरह समानता तक नहीं पहुँची है। आज भी अनेक महिलाएँ ऐसी परिस्थितियों में जी रही हैं जहाँ उनके सपनों को सीमित कर दिया जाता है। कई जगहों पर लड़कियों की पढ़ाई जल्दी छूट जाती है, कई कार्यस्थलों पर उन्हें बराबरी का वेतन नहीं मिलता और कई समाजों में उनके निर्णयों को महत्व नहीं दिया जाता। लेकिन आज का दौर एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत भी दे रहा है। महिलाएँ अब अपनी पहचान को लेकर अधिक सजग हैं और वे अपने अधिकारों के लिए खुलकर आवाज उठा रही हैं। डिजिटल तकनीक और शिक्षा ने उन्हें एक ऐसा मंच दिया है जहाँ उनकी बात दुनिया तक पहुँच सकती है। यह बदलाव धीरे-धीरे एक नई सामाजिक चेतना को जन्म दे रहा है, जिसमें समानता केवल आदर्श नहीं, बल्कि आवश्यकता बनती जा रही है।

वास्तविक परिवर्तन तभी जन्म लेता है, जब विचार जीवन के व्यवहार में उतरता है। सबसे पहली शुरुआत परिवार से हो सकती है। जब घर में बेटियों और बेटों को समान अवसर मिलते हैं, तभी समाज में समानता की नींव मजबूत होती है। शिक्षा व्यवस्था को भी इस दिशा में संवेदनशील बनाना होगा, ताकि लड़कियाँ केवल पढ़ाई ही न करें, बल्कि नेतृत्व और नवाचार के लिए भी प्रेरित हों। कार्यस्थलों को ऐसा वातावरण देना होगा जहाँ महिलाएँ सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें। राजनीति और प्रशासन में उनकी भागीदारी बढ़ाना भी आवश्यक है, क्योंकि निर्णय लेने वाली मेज पर उनकी उपस्थिति समाज के दृष्टिकोण को संतुलित बनाती है।

समय हमें याद दिलाता है कि परिवर्तन केवल शब्दों से नहीं, जिम्मेदारियों से जन्म लेता है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस हमें केवल उत्सव मनाने का अवसर नहीं देता, बल्कि एक जिम्मेदारी भी सौंपता है। यह जिम्मेदारी है एक ऐसे समाज के निर्माण की, जहाँ नारी को अपने सपनों को साकार करने के लिए संघर्ष नहीं करना पड़े। "देना है, तो पाना है" का संदेश हमें याद दिलाता है कि जब हम महिलाओं को अवसर, सम्मान और विश्वास देते हैं, तो हम वास्तव में अपने ही भविष्य को मजबूत बना रहे होते हैं। क्योंकि नारी केवल जीवन की जननी नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक भी है। जब वह आगे बढ़ती है, तो समाज की दिशा बदल जाती है। इसलिए आज का संकल्प यही होना चाहिए कि महिला सशक्तिकरण को केवल एक दिवस तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उसे जीवन की स्थायी संस्कृति बनाया जाए। तभी यह सिद्धांत सच होगा कि देना ही सबसे बड़ा पाना है।

युद्ध की विभीषिका में दम तोड़ती बेटियां : महिला दिवस का उत्सव या आत्मंथन?

बाबूलाल नागा

जब स्कूलों पर बम गिरते हैं और मासूम बच्चियां मलबे में दब जाती हैं, तब केवल मंचों पर भाषणों का क्या मूल्य है?

हर साल 8 मार्च को दुनिया भर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है। मंच सजते हैं, भाषण होते हैं और महिलाओं के सम्मान के बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं लेकिन क्या यह उत्सव सच में सार्थक है, जब दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध और हिंसा की आग में सबसे अधिक महिलाएं और मासूम बच्चियां ही झुलस रही हैं? क्या हम सिर्फ नारों और समारोहों में ही महिलाओं का सम्मान दिखा रहे हैं जबकि असली दुनिया में उनकी सुरक्षा और जीवन खतरे में हैं?

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट बताती है कि 2023 में युद्धग्रस्त देशों में मारे गए नागरिकों में लगभग 40 प्रतिशत महिलाएं थीं जबकि 30 प्रतिशत बच्चे थे। कुल मिलाकर 33,443 नागरिकों की मौत दर्ज की गई, जो पिछले वर्ष की तुलना में 72 प्रतिशत अधिक है। यह केवल संख्या नहीं है, बल्कि हजारों परिवारों के उजड़ने और अनगिनत सपनों के टूटने की कहानी है।

संयुक्त राष्ट्र की ओर से वर्ष 2013 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में लगभग 600 मिलियन महिलाएं और लड़कियां युद्ध जैसी हालातों के बीच में रहती हैं। अगर इस आंकड़े की तुलना वर्ष 2017 से की जाए तो यह 50 प्रतिशत अधिक है। अनुमानों के मुताबिक पिछले वर्ष सैन्य संघर्ष में बढ़ोतरी दर्ज की गई और इसके चलते महिलाओं को लिंग आधारित हिंसा का सामना करना पड़ा है।

सबसे बड़ी त्रासदी तब होती है जब युद्ध और हिंसा सीधे शिक्षा और भविष्य के साधनों को निशाना बनाते हैं। हाल ही में ईरान के मिनाब शहर में एक स्कूल पर हुए हमले में 150 से 170 छात्राओं की मौत की खबर आई। स्कूल जाने वाली इन मासूम बच्चियों के हाथों में किताबें थीं, हथियार नहीं। फिर भी वे युद्ध की राजनीति का शिकार बन गईं। उनके परिवारों के सपने और भविष्य की उम्मीदें उसी मलबे में दब गईं।

युद्ध केवल जान नहीं लेता बल्कि महिलाओं की गरिमा और अस्तित्व पर भी गहरा आघात करता है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार युद्धग्रस्त क्षेत्रों में महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा के मामलों में लगभग 50 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई है। इसका मतलब यह है कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा केवल युद्ध की छाया में बढ़ रही है, बल्कि उनके जीवन की हर पहलू में असुरक्षा बढ़ रही है।

हाल ही में इजराइल-हमास संघर्ष में भी हजारों नागरिक मारे गए, जिनमें बड़ी संख्या महिलाओं और बच्चों की थी। लगभग 16 हजार से अधिक महिलाएं और बच्चे अपनी जान गंवा चुके हैं और लाखों लोग विस्थापित हुए हैं। अफ्रीका, सीरिया, यूक्रेन और अफगानिस्तान जैसे देशों में भी यही स्थिति बनी हुई है। महिलाएं शरणार्थी बनकर दर-दर भटक रही हैं, कई को भोजन और सुरक्षित आश्रय तक नहीं मिल पा रहा है। सीरिया में लगभग 4 लाख गर्भवती महिलाएं आवश्यक मातृत्व सेवाओं तक पहुंचने के लिए संघर्ष कर रही हैं।

हमारे अपने समाज में भी तस्वीर संतोषजनक नहीं है। महिलाओं के खिलाफ अपराधों की खबरें नियमित रूप से सुर्खियों में रहती हैं। बलात्कार, घरेलू हिंसा, दहेज प्रताड़ना और उत्पीड़न जैसी घटनाएं यह बताती हैं कि महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान का मुद्दा अभी भी गंभीर चुनौती बना हुआ है। ऐसे में महिला दिवस केवल औपचारिक आयोजन नहीं रह जाता, बल्कि यह समाज को आत्ममंथन करने का अवसर बन जाता है।

महिला दिवस का असली उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों, सम्मान और समानता के लिए संघर्ष को मजबूत करना था। यह दिन उन महिलाओं को याद करने का दिन था जिन्होंने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई जिन्होंने समाज में बराबरी की राह बनाई लेकिन आज यह भी सच है कि कई बार यह दिवस केवल मंचों, भाषणों और प्रतीकात्मक कार्यक्रमों तक सीमित रह जाता है। महिला दिवस मनाने का सही तरीका यही है कि हम उन आवाजों को सुनें जो अभी भी दबा दी जाती हैं। हम उन संघर्षों को पहचानें जो रोजमर्रा की जिंदगी में महिलाएं झेलती हैं। हमें यह स्वीकार करना होगा कि केवल नारों और समारोहों से बदलाव नहीं आएगा; इसके लिए समाज की सोच और व्यवस्था दोनों में परिवर्तन लाना होगा।

आज जरूरत इस बात की है कि हम महिलाओं की सुरक्षा, शिक्षा और सम्मान को प्राथमिकता दें। बेटियों को भय और असुरक्षा से मुक्त वातावरण मिले, उन्हें अपने सपनों को पूरा करने का अवसर मिले—यही महिला दिवस की सच्ची भावना है। युद्ध और हिंसा की विभीषिका में दम तोड़ती बेटियां हमें यही याद दिलाती हैं कि महिला दिवस का वास्तविक मूल्य केवल उत्सव में नहीं, बल्कि ठोस कार्रवाई में है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस केवल खुशियां मनाने का दिन नहीं है। यह दिन हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हम कैसे ऐसा समाज बना सकते हैं, जहां हर महिला सुरक्षित, सम्मानित और स्वतंत्र जीवन जी सके। जब तक दुनिया की हर बेटी सुरक्षित नहीं होगी जब तक युद्ध और हिंसा में मासूम बच्चियां मरती रहेंगी, तब तक महिला दिवस का जश्न अधूरा ही रहेगा।

शायद उसी दिन अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की सच्ची सार्थकता दिखाई देगी—जब मंचों पर भाषणों और नारों के बजाय हर महिला के जीवन में सुरक्षा, स्वतंत्रता और सम्मान दिखने लगेगा। तब ही हम गर्व के साथ कह पाएंगे कि यह दिन केवल उत्सव का नहीं बल्कि महिलाओं की असली ताकत और अधिकार का प्रतीक भी है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर खुशियों के फलक पर महिलाओं के अमिट हस्ताक्षर

प्रमोद दीक्षित मलय

गतवर्ष फरवरी के उत्तरार्ध में शिक्षकों के एक तीन-दिवसीय शैक्षिक संवाद कार्यक्रम में जाना हुआ था। मुझे 90 मिनट के अपने सत्र में कक्षागत अनुभवों के दस्तावेजीकरण पर बातचीत करनी थी। पूर्वाह्न 11 बजे के टी ब्रेक के बाद मेरा सत्र था। दो घंटे के दो सत्रों के बाद हुए ब्रेक में सभी सहभागी शिक्षक-शिक्षिकाएं आम के पेड़ की नीचे बने बड़े से चबूतरे पर छोटे समूहों में गर्मागरम सूप का आनंद लेते हुए परस्पर बातचीत में मशगूल थे, तभी मेरा पहुंचना हुआ। पूर्व परिचित साथी सूप का एक गिलास मुझे थमाते हुए अनौपचारिक बातचीत करने लगे। तभी दो-तीन नये साथी शामिल हुए, जो सपत्नीक आये थे। उनसे परिचय का क्रम शुरू हुआ। जब मैंने उनमें से एक सज्जन की पत्नी, जोकि लगभग पीछे की ओर कुछ सहमी-सी खड़ी थीं, से पूछा कि आप क्या करती हैं। वह कुछ बोल पातीं उससे पहले ही उनके पति तपाक से बोल पड़े, ₹कुछ नहीं करतीं, हाउस वाइफ हैं।₹ दूसरी महिला से यही सवाल किया तो उनका उत्तर था, ₹सर, मैं कुछ नहीं करतीं, घर और बच्चे संभालती हूं।₹ मेरा मंतव्य उनको बातचीत में शामिल करना था, न कि उनकी नौकरी या अर्थोपार्जन के स्रोतों की जानकारी करना। किंतु उन दो उत्तरों ने मेरे मन-मस्तिष्क पर हलचल मचा दी थी। मैं सोच रहा था कि सामान्य गृहिणी क्या वास्तव में कुछ नहीं करतीं? क्या कुछ करने से आशय केवल अर्थोपार्जन से है? या फिर समाज में अभी भी घरेलू कामों को महत्व और स्वीकृति क्यों नहीं है। आखिर एक महिला 'मैं कुछ नहीं करतीं, गृहिणी हूं' यह कहते हुए झेंपती क्यों है? घर-परिवार के निर्माण एवं साज-संभाल में, एक गृहिणी की कितनी बड़ी और महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसका समुचित मूल्यांकन समाज ने अभी तक नहीं किया है। मुझे लगता है, इस मुद्दे को पक्षपात रहित स्वतंत्र मन-बुद्धि से समझना होगा। मैं इस मुद्दे की डोर से एक सच्चे संदर्भ का प्रसंग और जोड़ता हूं। इससे हम घर, समाज एवं राष्ट्र के विकास में महिलाओं की भूमिका का सम्यक्‍विवेचन कर सकेंगे।

मैं जब ब्लाक संसाधन केंद्र में सह-समन्वयक के रूप में काम कर रहा था। तब, कोविड काल के पहले की बात है। मैं अपने कस्बे से बिसंडा-बबेरू होते हुए फतेहपुर जा रहा था। बिसंडा से आगे निकलने पर बायीं ओर एक सुंदर सुव्यवस्थित हरा-भरा विद्यालय दिखा- पूर्व माध्यमिक विद्यालय सया। शिक्षा पर मेरी रुचि के चलते ऐसे विद्यालय मुझे आकर्षित करते रहें हैं। मेरे पैर अनायास ब्रेक पर जम गये, ब्रेक की चरमराहट के साथ गाड़ी रुकी, और मैं बारामदे से होते आफिस पहुंच गया। औपचारिक परिचय के बाद मैंने बच्चों से बातचीत की इच्छा व्यक्त की। प्रधानाध्यापक तीनों कक्षाओं से लगभग आधे-आधे बच्चों को मिलाकर एक कमरे में बैठा, मुझे वहां ले गये। बच्चों से परिचय कर बातचीत शुरू की। बच्चों के सवालों के संयोग से बातें लैंगिक असमानता पर चल पड़ीं। और विषय बन गया- घर के कामों में महिला-पुरुष की भागीदारी। सुबह सर्वप्रथम जागने से लेकर रात में सबसे अंत में सोने वाले व्यक्ति तक घर के सभी सदस्यों का कामों का विवरण ब्लैक बोर्ड पर लिखा गया। विश्लेषण से निष्कर्ष निकला कि महिला ही है जो सबसे पहले जगती और सबसे अंत में सोती है। घर-बार तथा खेत-खलिहान के 80 प्रतिशत से अधिक कार्यों में महिलाओं एवं बालिकाओं की प्रत्यक्ष भागीदारी है। समाधान निकला पुरुषों-बालकों को घर के इन कामों में हाथ बंटाना चाहिए, क्योंकि कार्यों का लिंग के रूप में कोई विभाजन नहीं होता। यह बातें उदाहरण देकर समझाई गईं। तभी सहसा एक बालिका ने तीखा सवाल कर दिया कि क्या मैं अपने घर में इन घरेलू कार्यों में हाथ बंटाता हूं, या यहां पर केवल उपदेश दे रहा हूं। मैंने स्वयं उत्तर देने की बजाय बारहवीं में अध्ययनरत बेटी संस्कृति को घर में फोन लगा, स्पीकर पर बात कराई। पूरे कक्षा ने लगभग 10-15 मिनट बात, तमाम सवाल किये। जवाबों से मिलने वाली संतुष्टि की खुशी बच्चों के चेहरे पर खिल उठी थी। एक प्रसंग को और जोड़ना लेख को समृद्ध करेगा। ऐसे ही एक बार मेरा पूर्व माध्यमिक विद्यालय बरेहंड़ा जाना हुआ। मैं जब स्कूल पहुंचा तब प्रार्थना आरम्भ हो चुकी थी। प्रार्थना एवं राष्ट्रगान बाद मुझे सम्बोधन के लिए कहा गया। मैंने सामान्य सी बात कही कि जब तक कक्षाओं और सभाओं में बालक-बालिकाएं या महिला-पुरुष अलग-अलग कतारों में बैठेंगे, तब तक लैंगिक भेदभाव बना रहेगा। दूसरे दिन विद्यालय के शिक्षक रामकिशोर पांडेय जी का फोन आया कि आज प्रार्थना सभा और कक्षाओं की बैठक व्यवस्था में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है। बच्चे मिक्स होकर बैठे हैं। रोमांचित करता यह दृश्य मुझे आह्लादित करने वाला था। ये तीन घटनाएं, सामान्य घटना प्रसंग न होकर महिलाओं की घर-परिवार एवं समाज में स्थिति, भूमिका और उसके महत्व को रेखांकित करती हैं। पितृसत्तात्मक समाज में एक महिला के श्रम की कितनी स्वीकृति हो सकी है, यह प्रश्न आज भी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समाधान की प्रतीक्षा में है। 'मैं कुछ नहीं करती' दरअसल एक महिला का अपना स्वर नहीं है, यह पुरुष प्रधान समाज की वह ध्वनि है, जो निरंतर एक महिला के कानों और मन-मस्तिष्क के माध्यम से उसके दिल में उतर टीस-कसक बन उसे कमतर और हीन सिद्ध कर रही है। समाज, घर के कामों को काम की श्रेणी में नहीं मानता। उसकी नजर में काम का अर्थ केवल पैसा कमाने से है। जबकि भोर से देर रात तक घर के कामों में खटती महिला के काम के आधार पर ही घर-परिवार सबल, समर्थ और सुदृढ़ हैं। कह सकते हैं कि पुरुष की बजाय महिला कहीं अधिक श्रमशील है, पर उसके श्रम का पारिश्रमिक और मूल्यांकन नगण्य है। भारत सरकार द्वारा 2024 में जारी नेशनल सर्वे सैंपल के अनुसार औसतन एक महिला, एक पुरुष की तुलना में एक घंटा अधिक काम करती है तथा उसके मनोरंजन, काम के दौरान सुस्ताने का औसत पुरुष के 127 मिनट के बरक्स 113 मिनट हैं। एक आश्चर्यजनक आंकड़ा तो यह भी है कि एक महिला तैयार होने में पुरुष की बजाय 6 मिनट कम लेती है किंतु सजने-संवरने के संदर्भ में वह हास्य का पात्र बनती है।

विश्व महिला दिवस (8 मार्च) पर विशेष

समय के सांचे में ढलती स्त्री !

डिजिटल संसार, सोशल मीडिया और व्यवहारिक जीवन में स्त्री की उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ दोनों ही नया आकार ले रही हैं। ऐसे में कहां खड़ी है आज की वामा। पड़ताल कर रहे हैं घनश्याम बादल।

दुनिया बदल रही है । खानपान, वातावरण, पर्यावरण, जीवन शैली, उपलब्धियां, चुनौतियां, समस्याएं और हल करने के तरीके सब समय के साथ बदल रहे हैं और उससे कहीं ज़्यादा तेजी के साथ बदल रही है आज की स्त्री।

हर बदलाव को गहन दृष्टि के साथ जांचती, परखती, स्वीकार-अस्वीकार करती और उससे उत्पन्न चुनौतियों से लड़ती हुई वामा आज किसी मायने में पुरुष से कम नहीं है।

वर्तमान समय में डिजिटल क्रांति, इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया ने जीवन के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण प्रभाव महिलाओं के जीवन पर भी पड़ा है। पहले जहाँ महिलाओं की सामाजिक अभिव्यक्ति सीमित मंचों तक सीमित थी, वहीं आज डिजिटल संसार और सोशल मीडिया ने उन्हें अपनी पहचान स्थापित करने, प्रतिभा प्रदर्शित करने और समाज में सक्रिय भागीदारी निभाने का एक व्यापक मंच प्रदान किया है।

डिजिटल संसार ने महिलाओं के लिए अवसरों के नए द्वार खोले हैं। आज लाखों महिलाएँ इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से शिक्षा, रोजगार और उद्यमिता के क्षेत्र में नई संभावनाएँ तलाश रही हैं। ऑनलाइन शिक्षा मंचों ने महिलाओं को घर बैठे उच्च शिक्षा और कौशल विकास का अवसर दिया है। बड़ी संख्या में महिलाएँ डिजिटल मार्केटिंग, ऑनलाइन व्यवसाय, ब्लॉगिंग और सामग्री निर्माण जैसे क्षेत्रों में

उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर रही हैं।

सोशल मीडिया ने महिलाओं की अभिव्यक्ति को भी नई शक्ति व स्वर दिए हैं। आज की महिलाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय खुलकर व्यक्त कर रही हैं। डिजिटल मंचों के माध्यम से वे अपनी समस्याओं और अनुभवों को समाज के सामने रख पा रही हैं। इससे जागरूकता के साथ सामाजिक मुद्दों पर व्यापक चर्चा संभव हुई है।

इसके अलावा भी डिजिटल माध्यमों ने महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी प्रदान किया है। आज अनेक महिलाएँ छोटे-छोटे ऑनलाइन व्यवसाय संचालित कर रही हैं। हस्तशिल्प, परिधान, सौंदर्य उत्पाद, घरेलू खाद्य पदार्थ और अन्य उत्पादों का ऑनलाइन व्यापार करके अपनी व परिवारों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर रही हैं। इस तरह डिजिटल तकनीक महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता का एक सशक्त माध्यम बन रही है।

डिजिटल संसार में महिलाओं की उपलब्धियों का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि वे सामाजिक परिवर्तन की वाहक बन रही हैं। आज महिला पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता और कंटेंट क्रिएटर सोशल मीडिया के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला अधिकार और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर समाज को जागरूक कर रही हैं। उनकी आवाज लाखों लोगों तक पहुँच रही है और सामाजिक चेतना को नई दिशा मिल रही है।

हालाँकि डिजिटल संसार के इन सकारात्मक पक्षों के साथ-साथ अनेक चुनौतियाँ भी हैं। सोशल मीडिया पर महिलाओं को अक्सर ट्रोलिंग, ऑनलाइन उत्पीड़न और अपमानजनक टिप्पणियों का सामना करना पड़ता है। डिजिटल मंचों पर फैलने वाली गलत सूचनाएँ और अफवाहें भी कई बार महिलाओं की छवि और सम्मान को प्रभावित करती हैं।

साइबर अपराध भी एक गंभीर चुनौती बनकर उभरे हैं। फर्जी प्रोफाइल बनाना, डीप फेक के माध्यम से निजी तस्वीरों का दुरुपयोग करना और ऑनलाइन ब्लैकमेल जैसी घटनाएँ महिलाओं के लिए मानसिक और सामाजिक संकट उत्पन्न कर सकती हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए डिजिटल साक्षरता और कानूनी जागरूकता बहुत जरूरी है।

डिजिटल संसार और व्यवहारिक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। सोशल मीडिया की बढ़ती लत कई बार वास्तविक जीवन के संबंधों और जिम्मेदारियों को प्रभावित कर सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि डिजिटल तकनीक का उपयोग संतुलित और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ किया जाए।

व्यवहारिक जीवन में भी महिलाओं के सामने बहुत सारी चुनौतियाँ हैं। समाज में अभी भी कुछ पारंपरिक धारणाएँ और रूढ़ियाँ महिलाओं की स्वतंत्रता और अवसरों को सीमित करती हैं। कार्यस्थलों पर समान अवसर और सुरक्षा के साथ शारीरिक एवं मानसिक शोषण कीसमस्या भी आती है। व्यस्तता भरे जीवन के बीचपरिवार और करियर के बीच संतुलन बनाना भी महिलाओं के लिए एक बड़ी चुनौती है।

इन चुनौतियों के बावजूद महिलाओं की उपलब्धियाँ निरंतर बढ़ रही हैं। शिक्षा, विज्ञान, खेल, कला, राजनीति और व्यवसाय जैसे अनेक क्षेत्रों में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि उन्हें अवसर और समर्थन मिले तो वे किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकती हैं। डिजिटल संसार ने इस संभावना को और अधिक व्यापक बना दिया है।

भविष्य की दृष्टि से यह आवश्यक है कि समाज महिलाओं को सुरक्षित और सम्मानजनक डिजिटल वातावरण प्रदान करे। सरकार, शैक्षणिक संस्थान और सामाजिक संगठन मिलकर डिजिटल साक्षरता और साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाएँ। इसके साथ ही परिवार और समाज को भी महिलाओं की प्रतिभा और स्वतंत्रता का सम्मान करना चाहिए।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि डिजिटल संसार और सोशल मीडिया ने महिलाओं के जीवन में नई संभावनाओं का विस्तार किया है। उन्हें अभिव्यक्ति, आत्मनिर्भरता और सामाजिक भागीदारी का अवसर मिला है। यह भी आवश्यक है कि इन अवसरों के साथ आने वाली चुनौतियों का भी विवेकपूर्ण ढंग से सामना किया जाए। जब डिजिटल तकनीक का उपयोग सकारात्मक उद्देश्य के लिए किया जाएगा, तब यह महिलाओं के सशक्तिकरण का एक प्रभावी साधन बन सकता है और समाज को अधिक समान, जागरूक और प्रगतिशील दिशा में आगे बढ़ा सकता है।

फ़िलहाल तो संघर्ष के चुनौती भरे दौर से गुजर रही है आज की स्त्री। अनेक चुनौतियों के बीच उसके बढ़ते हुए कदम आश्वस्त कर रहे हैं कि आने वाला युग स्त्री युग ही होगा। इसलिए बजाए उसके क़दम रोकने और उसका भविष्य, दशा, दिशा तथा कार्य क्षेत्र निर्धारित करने के बेहतर हो कि उसके आगे बढ़ने का रास्ता सुगम एवं सुरक्षित किया जाए तभी स्त्री पुरुष के बीच का खाई पाटी जा सकेगी। (अदिति फीचर्स)

(स्वतंत्र लेखक एवं विश्लेषक)

पंजाब सरकार की 'अपना कारोबार, अपनी पहचान' मुहिम के तहत विधानसभा हल्का अमृतसर उत्तरी की 100 उद्यमी महिलाओं का विशेष सम्मान : करमजीत सिंह रिंटू

अमृतसर 7 मार्च (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री स. भगवंत सिंह मान के नेतृत्व में पंजाब सरकार महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है, ताकि वे अपने परिवार और समाज की तरक्की में और अधिक महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

इन विचारों का प्रकटावा अमृतसर उत्तरी हलके के इंचार्ज तथा चेयरमैन इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट स. करमजीत सिंह रिंटू ने कम्युनिटी हॉल, रंजीत एवेन्यू, अमृतसर में पंजाब सरकार द्वारा आयोजित 'अपना कारोबार, अपनी पहचान' के तहत 'महिला उद्यमी सम्मान' कार्यक्रम के दौरान किया। इस कार्यक्रम में विधानसभा हल्का अमृतसर उत्तरी से संबंधित लगभग 100 उद्यमी महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

अपने संबोधन में स. रिंटू ने कहा कि आज महिलाओं की भागीदारी समाज के हर महत्वपूर्ण क्षेत्र में तेजी से बढ़ रही है। छोटे स्तर के घरेलू कारोबारों से लेकर बड़ी कंपनियों और उद्योगों तक महिलाएं अपनी योग्यता और क्षमता से अहम भूमिका निभा रही हैं। यहां तक कि विज्ञान, तकनीक और अंतरिक्ष क्षेत्र जैसे उच्च स्तर के क्षेत्रों में भी महिलाएं अपनी मेहनत और लगन से नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं।

उन्होंने कहा कि आज अनेक महिलाएं घर से ही टिफिन सेवा, सिलाई-कढ़ाई, ब्यूटी वर्क, सैलून, हस्तशिल्प और अन्य छोटे कारोबारों के माध्यम से न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं, बल्कि अपने परिवार की आय में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इससे समाज में महिलाओं की स्थिति और अधिक मजबूत हो रही है तथा वे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रही हैं।

स. रिंटू ने बताया कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके छोटे कारोबारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पंजाब सरकार द्वारा 'अपना कारोबार, अपनी पहचान' मुहिम चलाई जा रही है। इस मुहिम का उद्देश्य महिलाओं के हुनर को बढ़ावा देना और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए प्रेरित करना है।

उन्होंने कहा कि इस तरह के प्रयासों से महिलाओं में अपने कार्य के प्रति गौरव और आत्मविश्वास की भावना विकसित होती है। जब उन्हें यह महसूस होता है कि समाज और सरकार उनके परिश्रम और योगदान की कद्र करते हैं, तो वे और अधिक उत्साह और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ती हैं।

अंत में स. रिंटू ने कहा कि समाज की प्रगति तभी संभव है जब महिलाओं को समान अवसर और उचित सम्मान मिले। पंजाब सरकार महिलाओं के सशक्तिकरण और उनकी उन्नति के लिए निरंतर प्रयासरत है और भविष्य में भी ऐसे प्रयास जारी रहेंगे।

अमृतसर के फतेह सिंह कॉलोनी में नशा तस्करों की अवैध संपत्ति को गिराया गया

अमृतसर, 7 मार्च (साहिल बेरी)

– माननीय मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व में नशा तस्करी के खिलाफ चल रही मुहिम के तहत जिला प्रशासन अमृतसर ने आज बड़ी कार्रवाई करते हुए पुलिस स्टेशन सदर के अधिकार क्षेत्र में आने वाली फतेह सिंह कॉलोनी, 88 फुट रोड, अमृतसर में स्थित एक कुख्यात नशा तस्कर की अवैध रूप से अर्जित संपत्ति को ध्वस्त कर दिया।

गिराई गई यह संपत्ति ईशू पुत्र अमरनाथ निवासी गली नंबर 11, फतेह सिंह कॉलोनी, 88 फुट रोड, अमृतसर की बताई जा रही है। ईशू और उसका भाई प्रिंस नशे की तस्करी की गतिविधियों में शामिल रहे हैं और इनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत कई मामले दर्ज हैं।

ईशू के खिलाफ दर्ज मामले (कुल 4)

एफआईआर नंबर 56, दिनांक 22-04-2025 – धारा 21-B, 27-A NDPS एक्ट तथा 111(2-B), 111(3), 111(4) BNS, थाना सदर अमृतसर।

एफआईआर नंबर 218, दिनांक 25-09-2024 – धारा 21-B NDPS एक्ट, थाना सदर अमृतसर।

एफआईआर नंबर 205, दिनांक 03-12-2019 – धारा 379-B IPC, थाना ए-डिवीजन अमृतसर।

एफआईआर नंबर 198, दिनांक 27-07-2019 – धारा 379, 411 IPC, थाना सदर अमृतसर।

ईशू की उम्र लगभग 25 वर्ष है और वह फिलहाल जेल से बाहर है।

भाई प्रिंस के खिलाफ दर्ज मामले (कुल 2)

एफआईआर नंबर 204, दिनांक 16-10-2025 – धारा 21-B, 27-A, 29 NDPS एक्ट, थाना सदर अमृतसर।

एफआईआर नंबर 28, दिनांक 10-04-2021 – धारा 363, 366 IPC और 12 POCSO एक्ट, थाना घुम्मण, बटाला।

आज नशा तस्करी से बनाई गई अवैध संपत्तियों के खिलाफ चल रही मुहिम के तहत नगर निगम अमृतसर द्वारा फतेह सिंह कॉलोनी, 88 फुट रोड में बने इस अवैध ढांचे को गिरा दिया गया।

कमिश्नरेट पुलिस अमृतसर ने कहा कि नशा तस्करी के नेटवर्क को खत्म करने और इसमें शामिल अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। ऐसी कार्रवाइयों से यह स्पष्ट संदेश दिया जा रहा है कि नशे के पैसे से बनाई गई संपत्तियों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

पुलिस ने आम जनता से अपील की है कि वे ड्रग अपराधों के खिलाफ लड़ाई में सहयोग करें और किसी भी जानकारी को पंजाब पुलिस एंटी ड्रग हेल्पलाइन 97791-00200 पर साझा करें। दी गई जानकारी पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी।

इसके अलावा, गैंग अपराधों से जुड़ी जानकारी पंजाब पुलिस एंटी गैंगस्टर हेल्पलाइन 93946-93946 (कॉल/व्हाट्सएप) पर भी दी जा सकती है। गैंगस्टरों की गिरफ्तारी में मददगार सूचना देने वालों को 10 लाख रुपये तक का इनाम भी दिया जा सकता है।

"युद्ध नशों के विरुद्ध" अभियान के आंकड़े

1 मार्च 2025 से 6 मार्च 2026 तक एनडीपीएस एक्ट के तहत तेज कार्रवाई करते हुए कुल 1825 मामले दर्ज किए गए और 3238 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

इस दौरान पुलिस ने बरामद किया:

274.906 किलोग्राम हेरोइन
31.876 किलोग्राम अफीम
6.394 किलोग्राम मेथामफेटामाइन (आइस ड्रग)
9 किलोग्राम गांजा
15.885 किलोग्राम चरस
0.112 किलोग्राम कोकीन
325.492 किलोग्राम नशीला पाउडर
25 किलोग्राम भुक्की

इसके अलावा 1550 इंजेक्शन और 1,96,880 कैप्सूल/गोलियां भी बरामद की गईं। पुलिस ने 3,10,68,125 रुपये की ड्रग मनी जब्त की और नशा तस्करी में इस्तेमाल किए जा रहे 133 वाहनों को भी कब्जे में लिया, जिनमें 36 चार पहिया, 3 तीन पहिया और 94 दो पहिया वाहन शामिल हैं।

"युद्ध नशों के विरुद्ध" अभियान के तहत जिले भर में नशा तस्करी और नशे के दुरुपयोग के खिलाफ सख्त कार्रवाई लगातार जारी है।

(महिला दिवस विशेष) : सपनों की उड़ान: शिक्षिका और लेखिका डॉ. प्रियंका सौरभ

✍डॉ. विजय गर्ग

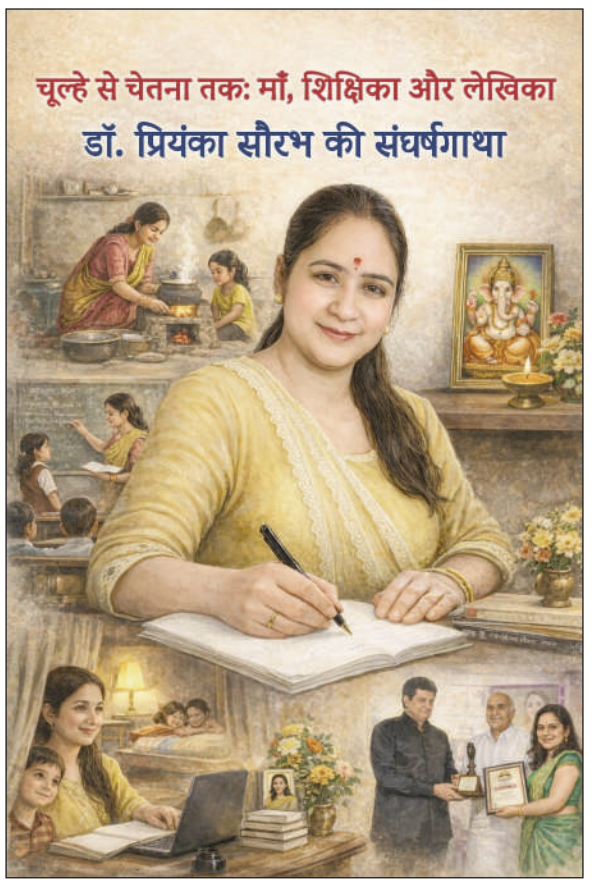

समाज के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ स्त्रियों ने सीमित संसाधनों और अनेक सामाजिक बंधनों के बावजूद अपने साहस, धैर्य और दृढ़ संकल्प से जीवन की नई दिशाएँ तय की हैं। स्त्री केवल परिवार की धुरी ही नहीं, बल्कि समाज की संवेदनशील चेतना भी है। जब एक स्त्री अपने भीतर की शक्ति को पहचान लेती है, तो वह केवल अपने जीवन को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज को प्रेरित करने का सामर्थ्य रखती है। ऐसी ही प्रेरक कहानी है शिक्षिका, लेखिका और संवेदनशील विचारक डॉ. प्रियंका सौरभ की, जिनकी जीवन यात्रा संघर्ष, साधना और सृजन का सुंदर संगम है।

हरियाणा के हिसार जिले के आर्यनगर गाँव के साधारण ग्रामीण परिवेश में जन्मी डॉ. प्रियंका सौरभ का बचपन सामान्य परिस्थितियों में बीता। उनके जीवन में न तो विशेष संसाधन थे और न ही कोई विशेष सुविधा। लेकिन उनके भीतर शिक्षा प्राप्त करने और जीवन में कुछ सार्थक करने की गहरी इच्छा अवश्य थी। यही इच्छा आगे चलकर उनके संकल्प की शक्ति बन गई।

उनकी शिक्षा-यात्रा के दौरान ही जीवन ने एक बड़ा मोड़ लिया जब स्नातक की पढ़ाई के दौरान उनका विवाह हो गया। विवाह के बाद उनके सामने पत्नी, बहू और बाद में माँ की जिम्मेदारियाँ आ खड़ी हुईं। अक्सर भारतीय समाज में ऐसे अवसर पर लड़कियों की शिक्षा और उनके सपने पीछे छूट जाते हैं। घर-परिवार की जिम्मेदारियाँ ही उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र बन जाती हैं। लेकिन डॉ. प्रियंका सौरभ ने परिस्थितियों को अपनी सीमाएँ बनने नहीं दिया। उन्होंने अपने जीवन की चुनौतियों को स्वीकार किया, लेकिन अपने सपनों को कभी त्यागा नहीं।

विवाह और पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। यह कार्य आसान नहीं था। सीमित समय, घरेलू कार्यों का दबाव और सामाजिक अपेक्षाएँ—इन सबके बीच शिक्षा की राह पर आगे बढ़ना किसी तपस्या से कम नहीं था। लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति और निरंतर परिश्रम के बल पर उन्होंने राजनीति विज्ञान में डबल एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने एम.फिल की पढ़ाई पूरी की और आगे पीएच.डी. के शोध कार्य की दिशा में भी निरंतर प्रयासरत रहीं।

उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ केवल डिग्रियों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह उस संघर्ष और समर्पण का परिणाम हैं जिसने हर कठिनाई को चुनौती दी। जीवन की इसी निरंतर साधना ने उन्हें सरकारी सेवा के क्षेत्र में भी सफलता दिलाई। पाँच बार सरकारी सेवा में चयनित होना किसी भी व्यक्ति के लिए बड़ी उपलब्धि है। यह उनके अथक प्रयास, आत्मविश्वास और लक्ष्य के प्रति समर्पण का प्रमाण है। अंततः उन्होंने हरियाणा शिक्षा विभाग में प्रवक्ता के रूप में अपनी पहचान स्थापित की।

एक शिक्षिका के रूप में डॉ. प्रियंका सौरभ केवल पाठ्यक्रम पढ़ाने तक सीमित नहीं रहतीं। वे अपने विद्यार्थियों के भीतर आत्मविश्वास, संवेदनशीलता और सकारात्मक सोच का बीज बोने का प्रयास करती हैं। उनके लिए शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया है। वे विद्यार्थियों को यह समझाने का प्रयास करती हैं कि जीवन में सफलता केवल अंकों या डिग्रियों से नहीं मिलती, बल्कि मेहनत, अनुशासन और निरंतर सीखने की इच्छा से मिलती है।

शिक्षण कार्य के साथ-साथ डॉ. प्रियंका सौरभ ने साहित्य के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनके लिए लेखन केवल एक शौक नहीं, बल्कि जीवन की अभिव्यक्ति का माध्यम है। जब भी उन्हें समय मिलता, वे अपने अनुभवों, संवेदनाओं और सामाजिक सरोकारों को शब्दों में ढालने का प्रयास करतीं। धीरे-धीरे यह प्रयास एक सशक्त साहित्यिक यात्रा में बदल गया।

उनकी रचनाओं में स्त्री जीवन की संवेदनाएँ, सामाजिक विसंगतियाँ, मानवीय संबंधों की जटिलताएँ और जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों की गहरी अनुभूति देखने को मिलती है। वे केवल कल्पना के संसार में नहीं रहतीं, बल्कि समाज के वास्तविक अनुभवों को अपनी लेखनी का आधार बनाती हैं।

उनका काव्य संग्रह "दीमक लगे गुलाब" रिश्तों की उन अदृश्य दरारों को उजागर करता है जो अक्सर दिखाई नहीं देतीं, लेकिन धीरे-धीरे संबंधों को भीतर से कमजोर कर देती हैं। इसी तरह "चूल्हे से चाँद तक" स्त्री जीवन के संघर्ष, सपनों और आकांक्षाओं की यात्रा को दर्शाता है। यह संग्रह बताता है कि स्त्री की दुनिया केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं है; उसके सपने आकाश की ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं।

"मौन की मुस्कान" उनकी एक और महत्वपूर्ण कृति है जिसमें उन चुप्पियों को आवाज़ दी गई है जिन्हें स्त्रियाँ अक्सर अपने भीतर ही समेट लेती हैं। यह संग्रह पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करता है कि समाज में कितनी ही भावनाएँ और पीड़ाएँ ऐसी होती हैं जिन्हें शब्द नहीं मिल पाते।

बाल साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है। "परियों से संवाद" और "बच्चों की दुनिया" जैसी कृतियाँ बच्चों की कल्पनाशीलता, जिज्ञासा और संवेदनशीलता को अभिव्यक्त करती हैं। इन रचनाओं में बालमन की सहजता और सरलता को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

निबंध लेखन के क्षेत्र में उनका संग्रह "समय की रेत पर" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें उन्होंने सामाजिक परिवर्तनों, महामारी के दौर में मानव मनोविज्ञान और समाज में बदलती संवेदनाओं पर विचारपूर्ण लेख प्रस्तुत किए हैं।

इसी प्रकार "निर्भये" स्त्री साहस और आत्मसम्मान की प्रेरक कहानियों का संग्रह है। यह कृति बताती है कि स्त्री यदि अपने भीतर के साहस को पहचान ले, तो वह किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकती है। अंग्रेज़ी निबंध संग्रह "Fearless" में भी उन्होंने भारतीय स्त्री जीवन की शक्ति और संघर्ष को वैश्विक संदर्भ में प्रस्तुत किया है।

लघुकथा संग्रह "आँचल की चुप्पी" स्त्री मन की सूक्ष्म संवेदनाओं को बहुत मार्मिक ढंग से सामने लाता है। वहीं "खिड़की से झांकती ज़िंदगी" रोज़मर्रा के जीवन के अनुभवों को संवेदनशील दृष्टि से देखने का प्रयास है। इन सभी कृतियों के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया है कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाला माध्यम भी है।

डॉ. प्रियंका सौरभ की लेखनी का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे समाज के उन विषयों को भी उठाती हैं जिन पर अक्सर कम चर्चा होती है। वे दिव्यांग बच्चों की समस्याओं, बुज़ुर्गों की उपेक्षा, शिक्षकों के मानसिक दबाव और समाज में बढ़ती संवेदनहीनता जैसे विषयों पर गंभीरता से लिखती हैं। उनकी रचनाएँ पाठकों को केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि सोचने के लिए प्रेरित करती हैं।

उनकी साहित्यिक यात्रा में अब तक दस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और विभिन्न समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में उनके दस हजार से अधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। यह संख्या केवल एक आँकड़ा नहीं, बल्कि उनके निरंतर लेखन और सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

साहित्य और समाज के क्षेत्र में उनके योगदान को अनेक संस्थाओं ने सम्मानित भी किया है। उन्हें आईपीएस मानव पुरस्कार, नारीरत्न, सुपर वुमन अवार्ड तथा कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए हैं। हालांकि उनके लिए सबसे बड़ा सम्मान पाठकों का विश्वास और प्रेम है।

डॉ. प्रियंका सौरभ का जीवन यह सिखाता है कि संघर्ष जीवन का अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत हो सकता है। यदि व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदार हो और निरंतर प्रयास करता रहे, तो कोई भी बाधा उसे आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती।

आज जब समाज तेजी से बदल रहा है और जीवन की भागदौड़ में संवेदनाएँ कहीं खोती हुई दिखाई देती हैं, ऐसे समय में उनकी लेखनी हमें मानवीय मूल्यों की याद दिलाती है। वे यह संदेश देती हैं कि जीवन की सच्ची सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों में नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपने दायित्व को निभाने में भी होती है।

महिला दिवस के इस विशेष अवसर पर डॉ. प्रियंका सौरभ की यह यात्रा हमें यह प्रेरणा देती है कि स्त्री यदि अपने भीतर की शक्ति को पहचान ले, तो वह अपने जीवन की दिशा स्वयं तय कर सकती है। वह केवल अपने परिवार का आधार ही नहीं, बल्कि समाज की चेतना भी बन सकती है।

उनकी कहानी हमें यह विश्वास दिलाती है कि सपने परिस्थितियों के मोहताज नहीं होते। यदि मन में दृढ़ संकल्प हो और प्रयास निरंतर हो, तो हर सपना एक दिन साकार हो सकता है।

डॉ. प्रियंका सौरभ की यह यात्रा न केवल एक स्त्री की उपलब्धि की कहानी है, बल्कि उन सभी महिलाओं के संघर्ष और संकल्प का प्रतीक है जो घर और समाज की जिम्मेदारियों के बीच अपने सपनों को जीवित रखती हैं। यही उनकी सबसे बड़ी पहचान और सबसे बड़ी प्रेरणा है।

(सेवानिवृत्त प्राचार्य, शैक्षिक स्तंभकार एवं प्रख्यात शिक्षाविद्, मलोट, पंजाब)

कोई कमी नहीं होगी, राज्य में पर्याप्त तेल है: आपूर्ति मंत्री

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मिडिल ईस्ट युद्ध की वजह से तेल की कीमतें बढ़ गई हैं। कच्चे तेल की कीमतें $94.51 प्रति बैरल तक पहुंच गई हैं। इस बीच, युद्ध के लिए तेल खत्म होने के डर से पेट्रोल पंपों पर भारी भीड़ है। इस बारे में सप्लाई मिनिस्टर कृष्ण चंद्र पात्रा ने रिएक्शन दिया है। मिनिस्टर ने कहा कि राज्य में अभी पेट्रोल और डीज़ल मौजूद है। युद्ध के लिए गुमराह करने वाली जानकारी आ रही है। राज्य में काफ़ी तेल है। रूस से तेल आ रहा है, तेल की कोई कमी नहीं होगी। राज्य के लोगों को सरकारी जानकारी पर भरोसा करना चाहिए। तेल की कभी कोई दिक्कत नहीं होगी, मंत्री ने कहा। मंत्री ने फिर कहा कि ब्लैक मार्केटिंग करने वालों पर नज़र रखी जा रही है। ज़रूरत पड़ने पर कार्रवाई की जाएगी। युद्ध का असर भारत पर नहीं पड़ेगा। खाने-पीने की चीज़ें भी स्टॉक में हैं। इस समय LPG के दाम बढ़ेंगे, लेकिन स्टॉक है। रेट कुछ समय के लिए बढ़ रहा है।

राज्यसभा चुनाव के बारे में सप्लाई मंत्री ने कहा कि BJP 3 सीटें जीतेगी। BJP इंडिपेंडेंट कैंडिडेट को सपोर्ट कर रही है। BJD में कुछ बीजू लवर और कुछ नवीन लवर हैं। बीजू लवर दिलीप लवर को पसंद कर रहे हैं। BJD धीरे-धीरे टूट रही है। देखते हैं आगे क्या होता है।

सुभद्रा योजना के पैसे की चौथी किस्त रविवार को मिलेगी, डिप्टी चीफ मिनिस्टर ने दी जानकारी

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: सुभद्रा योजना के पैसे की चौथी किस्त रविवार को मिलेगी। डिप्टी चीफ मिनिस्टर पार्वती परिदा ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। 1 करोड़ 12 लाख 57 हजार 667 लोगों ने अप्लाई किया था। इनमें से 1 करोड़ 2 लाख 12 हजार 665 महिलाओं को सुभद्रा का पैसा मिलेगा। 5 हजार करोड़ से ज़्यादा का पैसा बेनिफिशियरी के बैंक अकाउंट में जाएगा। इस बार 2 लाख 13 हजार नए बेनिफिशियरी को भी सुभद्रा का पैसा मिलेगा। पुरी के तलबोनिया में एक बड़ा प्रोग्राम होगा। सभी बेनिफिशियरी को चीफ मिनिस्टर की मौजूदगी में सुभद्रा का पैसा मिलेगा। 2 लाख 13 हजार 198 नए बेनिफिशियरी को सुभद्रा का पैसा मिलेगा। सुभद्रा बेनिफिशियरी की लिस्ट बदलना एक लगातार चलने वाला प्रोसेस है। जिनकी उम्र 21 साल हो गई है, वे इस स्कीम से जुड़ेंगे। जिनकी उम्र 60 साल हो गई है, वे पेंशन लिस्ट में जाएंगे, डिप्टी चीफ मिनिस्टर ने कहा।

अमनदीप अस्पताल ने उजाला सिग्नस के साथ साझेदारी में "चलती रहे वो - महिला जोड़ों की देखभाल सप्ताह" का शुभारंभ - 8 से 14 मार्च तक महिलाओं के लिए निःशुल्क ऑर्थोपेडिक परामर्श

अमृतसर 7 मार्च साहिल बेरी

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, अमनदीप अस्पताल ने उजाला सिग्नस हेल्थकेयर सर्विसेज के साथ साझेदारी में 'चलती रहे वो - महिला जोड़ों की देखभाल सप्ताह' नामक एक विशेष स्वास्थ्य पहल शुरू की है, जो 8 से 14 मार्च तक चलेगी।

इस सप्ताह भर चलने वाली पहल के तहत, घुटने के दर्द, पीठ दर्द, कूल्हे की तकलीफ, गठिया के लक्षण, रीढ़ की हड्डी से संबंधित समस्याओं और हड्डियों के स्वास्थ्य और ऑस्टियोपोरोसिस से संबंधित समस्याओं से पीड़ित महिलाओं को निःशुल्क ऑर्थोपेडिक परामर्श प्रदान किया जाएगा।

महिलाओं में जोड़ों और रीढ़ की हड्डी की समस्याएं अक्सर अनसुनी और अनुपचारित रह जाती हैं, क्योंकि कई महिलाएं अपने स्वास्थ्य की तुलना में पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देती हैं। हार्मोनल परिवर्तन, विशेष रूप से गर्भावस्था के बाद और रजोनिवृत्ति के बाद, हड्डियों के घनत्व में कमी और जोड़ों के क्षरण के जोखिम को काफी हद तक बढ़ा देते हैं, जो गतिशीलता और जीवन की समग्र गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

इस पहल के बारे में बोलते हुए, अमनदीप अस्पताल के ऑर्थोपेडिक्स विभाग के अध्यक्ष डॉ. अवतार सिंह ने कहा: "महिलाएं हर परिवार की रीढ़ होती हैं, फिर भी वे अक्सर अपने स्वास्थ्य के लिए चिकित्सा सहायता लेने में देरी करती हैं। जोड़ों का दर्द, पीठ दर्द और गठिया के शुरुआती लक्षणों को अक्सर तब तक अनदेखा किया जाता है जब तक कि चलने-फिरने की क्षमता गंभीर रूप से सीमित न हो जाए। नियमित ऑर्थोपेडिक जांच केवल दर्द के इलाज के बारे में नहीं है, बल्कि स्वतंत्रता और जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने के बारे में भी है। विशेष रूप से 40 वर्ष की आयु के बाद और रजोनिवृत्ति के बाद, महिलाओं में ऑस्टियोपोरोसिस और जोड़ों के क्षरण का खतरा अधिक होता है। प्रारंभिक जांच और समय पर उपचार से दीर्घकालिक विकलांगता और बड़ी सर्जरी की आवश्यकता को रोका जा सकता है। 'चलती रहे वो' के माध्यम से, हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक महिला आत्मविश्वास से, सक्रिय रूप से और दर्द मुक्त होकर चलती रहे।" अमनदीप अस्पताल की निदेशक डॉ. अमनदीप कौर ने आगे कहा कि महिलाओं को स्वास्थ्य के साथ सशक्त बनाना भविष्य को सशक्त बनाना है। 'चलती रहे वो' के माध्यम से हम महिलाओं को अपने जोड़ों के स्वास्थ्य पर नियंत्रण रखने और दर्द-मुक्त एवं असीमित जीवन जीने का अवसर दे रहे हैं। महिला संयुक्त देखभाल सप्ताह के दौरान, परामर्श में घुटने के दर्द और शुरुआती गठिया, पीठ और गर्दन के दर्द, कूल्हे के जोड़ों की समस्याओं, ऑस्टियोपोरोसिस की जांच संबंधी मार्गदर्शन, रजोनिवृत्ति के बाद हड्डियों के स्वास्थ्य और जोड़ों की सुरक्षा के लिए जीवनशैली संबंधी परामर्श पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023